कैराना

कल और आज

"kairana - Kal Aur Aaj"

2004 ई. से कैराना वेबसाइट परं उपलब्ध दुर्लभ ऐतिहासिक जानकारियाँ

संकलन-संपादन (Compiled & Edited) :

मौ. उमर कैरानवी

Mohd. Umar Kairanvi

Established : kairanablogspot.in
Ex-Editor(H.) : jadeed adab - German
Web Designer : Ghalib Institute (Aiwan-e-Ghalib), New Delhi - 2
e-mail : umakairanvi@gmail.com

Mobile No. : 9368985511(Sat-Sunday, Kairana)
9871416172(Delhi)

सौजन्यः

अवकाशप्राप्त अध्यापक

हाजी मौलाना शमसुल इस्लाम मज़ाहिरी बाग़बाँ

M.A. , वैद्य (रजि.)

ईदगाह रोड, कैराना Mo: 9997428050,

टाईपसैटिंग,चित्र एवं आवरण : बाग़बाँ

मुद्रकः फरीद बुक डिपो, दिल्ली . 110006

प्रकाशकः

कैराना वेबसाइट समिति

Published feb-2007

kairana.blogspot.in

Contact: **Dr. Saleem Akhtar,** Jama Masjid, Kairana-247774 (U.P.)

Mobile: 9319390508

Rs. 20/-

विषय सूची

मामचन्द चौहान
दैनिक जागरण,
10 सितम्बर 1997 ;जिमत मकपजद्ध

कैराना जो कभी कर्ण की राजधानी थी

मुजफ़्फ़रनगर से करीब 50 कि. मी. पश्चिम में हरियाणा सीमा से सटा यमुना नदी के पास करीब 90,000 की आबादी वाला यह कस्बा कैराना प्राचीन काल में कर्णपुरी के नाम से विख्यात था जो बाद में बिगडकर किराना नाम से जाना गया और फिर किराना से कैराना में परिवर्तित हो गया। सर्व

कैराना से दक्षिण में ही बसे तीतरवाड़ा गाँव में एक तीतर खाँ पठान रहता था जिसके जुल्म से लोग काफी तंग आ चुके थे। बताते हैं कि इस क्षेत्र में उस समय होने वाली शादी के बाद दुल्हे द्वारा यहाँ से गुजरने वाली दुल्हन की डोली उक्त तीतर खाँ एक रात अपने पास रखता था। इसी प्रकार उस समय जब तीतर खाँ ने अपनी आदत के अनुसार यहाँ से गुजरने वाली एक बारात को रोक कर नव–वधु को जबरन दुल्हे से ले लिया तो दुल्हे पक्ष के लोग शहर पंजीठ में रहने वाले उस समय के अति प्रभावशाली व्यक्ति राणाहुर्रा जो कुछ वर्षो पूर्व ग्राम जूण्डला (हरियाणा) से आकर यहाँ बसा था के पास पहुँचे और तीतर खाँ के जुल्म की कहानी उनको सुनाई। आज जहाँ पर तीतरवाडा बसा है वह पंजीठ से मात्र 3 किलो मीटर की दूरी पर है तथा कैराना से 5 किलो मीटर दक्षिण में है। बताते हैं कि राणाहुर्रा ने फरियाद सुनकर तीतर खाँ से युद्ध करने की ठान ली और वह तीतर खाँ के पास तीतरवाडा पहुँचा और वधु को मुक्त करने का आग्रह किया जिस पर तीतर खाँ ने नव वधु को वापिस करने से मना कर दिया इस पर राणा हुर्रा ने अपने 20 पुत्रों व अन्य साथियों सहित तीतर खाँ पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में तीतर खाँ को मौत के घाट उतार दिया गया और नव वधु को मुक्त करा लिया गया। इस युद्ध में राणा हुर्रा के 17 पुत्र शहीद हो गये। पुत्र कलसा, दीपचन्द व दोपाल बचे इनमें से बाद में कलसा से कैराना क्षेत्र के गूजरों की चौरासी कलस्यान नाम से बसी जो आज भी कलस्यान खाप के नाम से जानी जाती है। दूसरे पुत्र दीपचन्द ने देवबंद का शासन किया जबकि तीसरे पुत्र दोबाल ने रामपुर मनिहारान पर शासन किया और वहाँ पर खूबडो की चौरासी बसायी। बताते है कि

मुक्त करायी गयी नव वधु राणा हुर्रा की पत्नी बनी, उससे 2 पुत्र सलखा व सैगला हुये इन दोनों पुत्रों में से सलखा ने सिसौली पर शासन किया और बलियान खाप बसायी और सैगला ने मेरठ जनपद के चौरासी खाप सैगलान बसायी। जानकारी के अनुसार आज 4 चौरासी खाप हैं। कैराना क्षेत्र में कलसयान नाम से, रामपुर मनिहारान में खूबडों की चौरासी तथा सिसौली क्षेत्र में बालियान खाप तथा मेरठ में सैगलान खाप के नाम से विख्यात है। यह शहर पंजीठ से राणा हुर्रा की ही वंशावली है कुल मिलाकर शहर पंजीठ जो आज तक पिछडे गाँव के रुप में विद्यमान है, ने इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण इतिहास की कडी प्राचीन इतिहास मे जोडी जिसका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक था इस गांव में वर्तमान समय में सैनी समाज के लोगों सहित मुस्लिम गूजर रहते हैं।

कैराना पर मुगल बादशाहों की नजरे इनायत रही है यही कारण है कि उन्होंने यहां पर अनेक महत्वपूर्ण निर्माण कराये जिनके अवशेष आज भी जीर्ण अवस्था में खण्डहर बने मुगलकाल की गवाही दे रहे हैं। कैराना के पूर्व में कांधला, पश्चिम में पानीपत, उत्तर में झिंझाना व शामली तथा दक्षिण में प्राचीन शहर पंजीठ व तीतरवाडा स्थित है। यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि पांडवों ने जो पाँच गाँव दुर्योधन से माँगे थे वह गाँव पानीपत, सोनीपत, बागपत, तिलपत, वरुपत (बरनावा) यानि पत नाम से जाने जाते हैं। महाभारत काल में कैराना से होकर ही यमुना नदी बहती थी और यहाँ पर राजा कर्ण का राज्य था जिन्होने अपने समय में कई महत्वपूर्ण किले बनवाये और इसके चारो ओर पांडवों का रहन सहन व आवागमन था। कहा जाता है कि दानवीर कर्ण यमुना नदी के किनारे प्रातःकाल सूर्य देवता की पूजा किया करते थे। इसी स्थान पर राजा इन्द्र को राजा कर्ण ने अपने कवच कुण्डल दान में दे दिये थे। तब से ही राजा कर्ण दानवीर के नाम से विख्यात हुए।

महाभारत युद्ध स्थल होने के कारण तथा इसके कैराना के समीप होने के कारण पाण्डव व कौरवों ने कुरुक्षेत्र के आसपास चारों ओर युद्ध शिविर लगाये थे इन शिविरों में श्याम के नाम से जहाँ श्री कृष्ण रहते थे शामली कस्बा है तथा कैराना में महाबली कर्ण, नकुड़ में नकुल, तथा थानाभवन में भीम आदि के शिविर थे इसी प्रकार क अक्षर से नाम प्रारम्भ होने वाले कस्बों में करनाल, कैराना, कुरूक्षेत्र, कांधला आदि में कुरूवंश के युवराज दुर्योधन ने अंगदेश बनाकर कर्ण को सौंपा था और राजा कर्ण ने यमुना किनारे इस स्थान को केन्द्र बिन्दु मानकर महत्वपूर्ण निर्माण कराये लेकिन बाद में मुगल कालीन समय में यह महाभारत कालीन स्मृतियां लुप्त कर दी गईं।

बाद में सम्राट जहांगीर दिल्ली से दो बार कैराना आये और

उन्होंने यहॉ पर दरबारेआम किया। लाल पत्थरों से निर्मित यहाँ पर कई दरवाजे व इमारतें आज भी इस काल की याद दिला रही हैं। सम्राट जहाँगीर व औरंगजेब ने जब पानीपत की लडाई लडी थी तब उन्होंने कैराना को ही अपने सैनिकों की छावनी बनाई थी उनके कई मकबरे नुमा भवन आज भी इस्लामिया स्कूल के पास जहाँ पर वर्तमान समय में पुलिस चौकी इमाम गैट है, मौजूद हैं। इस क्षेत्र को आज भी छावनी के नाम से पुकारते हैं। औरंगजेब द्वारा बनाई गयी मस्जिद जो करीब 400 वर्ष पुरानी है, यहाँ पर मौहल्ला दरबार में मौजूद है। पिछले दिनों जब इस मस्जिद की दक्षिण की ओर की दीवार तोड कर उसमें दुकान निकाली जा रही थी तो इस मस्जिद के नीचे एक तहखाना व सुरंग मिली थी जैसे ही इस रहस्य की चर्चा फैली शहरवासी देखने के लिए उमड पडे। उस हिस्से में दीवार करके प्रशासन ने बंद करा दिया था। इस बारे में कुछ लोगों का कहना था कि उक्त सुरंगनुमा तहखाने से उस समय की कोई दुलर्भ या पुरानी कीमती वस्तु मिली थी यह मामला आज भी रहस्यपूर्ण बना हुआ है। इस बारे में इतिहासकारों का यह भी कहना है कि यह सुरंग व तहखाना राजा कर्ण द्वारा यमुना नदी से पानी लाने के लिये यहाँ बनाई थी। सन 1527 ई. में शामली परगना जिसमें कैराना भी शामिल था सम्राट जहांगीर ने अपने खास विश्वसनीय नवाब मुकर्रब खाँ को भेंट स्वरूप दिया था। इस परगने की सीमा करनाल तक थी मुकर्रब खाँ ने कैराना को अपना लिया और विकसित किया था उन्होने कैराना में पानीपत–खटीमा मार्ग के पास एक सुन्दर तालाब, नवाब किला, नवाब दरवाजा एवं सुरंगे आदि बनवाई थीं जिनके अवशेष आज भी मौजूद हैं। तालाब के पास कई पुरानी खण्डहर नुमा इमारतें, दरवाजे व सिदरियों में मंदिर आकार के खण्डहर और बैगमपुरा मौहल्ले में एक बडी पुरानी सराय, बैगम महल, बारहदरी तथा सराय वाली मस्जिद जो बेगम महरूनिशा ने बनवाई थी तथा कई विशाल दीवारें अब भी खण्डहर बनी प्राचीन संस्कृति की याद दिला रही है। बेगमपुरा मौहल्ले में हकीम मुकर्रब खाँ की बेगमें रहती थी और मौहल्ला दरबार व आसपास उनका दरबार–ए–आम लगता था। यहाँ पर नवाब के किलों में चार कसौटी के खम्ब थे जो वर्तमान में पानीपत शहर में सुप्रसिद्ध हजरत मौला कलन्दरशाह के मजार में लगे हुये हैं।

कैराना में सम्राट जहाँगीर के लिये नवाब हकीम मुकर्रब खाँ ने एक तख्ते ताऊस (सिंहासन) भी बनवाया था जिसकी कीमत उस समय विदेशी सरकार ने लंदन में 72 करोड रूपये लगायी थी जिसको औरंगजेब के समय नादिरशाह लूट कर ईरान ले गया था जो आज भी वहां पर मौजूद है। जहाँगीर बादशाह ने किसी कार्य से खुश होकर कैराना व क्षेत्र में अपने विश्वसनीय नवाब हकीम मुकर्रब खाँ के द्वारा अनेक विकास कार्य कराये

नवाब मुकर्रब खाँ ने पानीपत रोड के पास करीब 55 बीघा भूमि में तालाब व किला बनवाया जिसकी चौडाई लगभग 250 वर्ग गज है इस तालाब की एक ओर दीवार नहीं है जबकि तीन ओर पक्की दिवारें है जिनमें सिढियां बनी हुई हैं इस तालाब के बीच एक सुन्दर व सफेद पत्थरों से निर्मित करीब 15 फुट ऊंचा व 60 फुट लम्बा चौडा टापू (चबूतरा) है बताया जाता है कि नवाब साहब अपनी बेगमों के साथ किश्ती द्वारा तालाब की सैर किया करते थे तथा बीच में स्थित चबूतरे पर आराम फरमाया करते थे इस तालाब के पास बने किले के नीचे तीन सुरंगे हैं। जिनका एक दरवाजा यमुना नदी की ओर तथा एक दिल्ली की और तीसरा पानीपत की ओर खुलता है तथा यहीं से एक सुरंग नवाब गेट से होते हुए दरबार वाली शाही मस्जिद में खुलती थी। बताते हैं कि उक्त रास्ते से नवाब साहब नमाज के लिए जाते थे। दूसरी नगर में एक कुएं में आकर खुलती है जबकि तीसरी सुरंग दिल्ली में इसलिये खुलती थी क्योंकि वहीं सम्राट जहाँगीर रहता था। इसी के पास बू अलीशाह कलन्दर शाह भी थे। आज भी वहाँ पर उनकी स्वयँ की एवं उनके परिवारजनों की कब्रें मौजूद हैं। कैराना में स्थित ऐतिहासिक नवाब तालाब की कहानी के सम्बंध में बुजुर्ग लोग बताते हैं कि नवाब मुकर्रब खाँ ने एक नौलखा बाग भी लगवाया था जिसमें 360 कुएं खोदे गये थे जिनसे इस बाग की सिंचाई होती थी। इस नौलखा बाग में एक एक पेड फलदार लगवाये थे जिनमें आम, अमरूद, सेब, लीची, कैहवा आदि थे। इस बाग में किले के आसपास एक हजार पिस्ता के पेड थे जबकि भारत में आज और उस समय कहीं भी पिस्ता पैदा नहीं होता था। आज वह पेड तो नहीं हैं बल्कि लगभग दो सौ कुओं के निशान आज भी बंद हालत में मौजूद हैं इस तालाब की तीन साईड प्राचीन समय की बनी हुई हैं आज भी टूटी हालत में स्थित है। कहा जाता है कि इस तालाब को उस समय के दानवों 'भूतों' द्वारा एक ही रात में बना दिया गया था। इसमें लगे दानव उस समय रात को एक तरफ की दीवार अधूरी छोडकर भाग गये थे जब किसी महिला ने रात्रि को ही भोर होने से पहले चक्की चला दी थी।

दानवीर कर्ण के नाम से विख्यात कैराना में राजा कर्ण, सम्राट जहाँगीर और नवाब हकीम मुकर्रब खां का इतिहास सरकारी गजट में भी मिलता है। कैराना के एक इन्टर कालिज के शिक्षक श्री आशाराम शर्मा जिन्होंने यहां के इतिहास पर शोध किया है के अनुसार यहाँ पर शासन व प्रशासन ने प्राचीन काल की बनी स्मृतियों के सौन्दर्यकरण पर भी ध्यान नहीं दिया और हमेशा कैराना की उपेक्षा ही की। प्रशासन ने कभी भी इस कस्बे को पुरातत्व विभाग को नहीं सौंपा और न ही ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा हेतु कोई कदम उठाया। स्वाधीनता आन्दोलन में शामली तहसील को

क्रांतिकारियों द्वारा जला दिया गया था जिस कारण अंग्रेजों ने बाद में कैराना में तहसील बनवाकर इसको मुख्यालय का रूप दे दिया था।

कैराना कस्बा हकीमों की नगरी के नाम से भी विख्यात रहा है इसके अलावा शास्त्रीय संगीत के नाम पर तथा फिल्मी दुनिया के अभिनय आदि में विशेष ख्याति प्राप्त की। कैराना ने वीणावादक, बांसुरी वादक, ध्रुपद गायक तथा अनेक शास्त्रीय गायक देश को दिये हैं। यहाँ ''कैराना घराना'' जो अब ''किराना घराना'' के नाम से जाना जाता है की संगीत साधना मुगल काल से हुई थी। उस समय कैराना के रहने वाले उस्ताद शकूर अली खाँ द्वारा यह संगीत कला शुरू की गई थी। किराना घराना आज भारत में ही नहीं बल्कि देश विदेश में भी प्रसिद्ध है कुछ वर्ष पूर्व किराना घराने की यशस्वी कलाकार श्रीमती गंगुबाई हंगल का शास्त्रीय गायन, नव भारत टाइम्स ग्रुप द्वारा स्वर्गीय प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी की पुण्य तिथि पर अपने उत्सव में आयोजित किया था। 20वीं सदी से पहले कैराना घराने का संगीत देश विदेश में प्रसिद्ध रहा।

बम्बई की दर्जनों फिल्मों में अभिनय करने वाले हकीम कैरानवी जो पहले लम्बे समय तक अमिताभ बच्चन के हैयर ड्रेसर रहे, कैराना मौहल्ला शेखबड्डा के थे। हकीम कैरानवी परिवार के शमीम अहमद यहाँ कैराना में शामली बस अड्डे पर हकीम हैयर ड्रेसर के नाम से दुकान आज भी करते हैं। उत्तम कुमार से हकीम कैरानवी की शक्ल मिलती थी इस कारण उत्तम कुमार की मृत्यु होने पर हकीम कैरानवी ने उनकी अधूरी फिल्में पूरी कीं। हकीम कैरानवी की पत्नी आज भी बम्बई में फिल्म अभिनेत्रियों के हैयर ड्रेसर सम्बंधी कार्य बखूबी निभा रही हैं। इस समय हकीम कैरानवी के लडके आलिम हकीम सलमान खान, अजय देवगन, काजोल, काजल, सैफ अली खान और विवेक ओबेराय का हैयर ड्रेसर है।

इसके अलावा पीरजी मुख्तार उर्फ मुन्शी मुनक्का कैराना के मौहल्ला इमामबाडा में रहते थे जिन्होंने लगभग 50 सुपरहिट फिल्मों मे गाया। इन फिल्मों में मेरे महबूब, प्यार का बन्धन, महबूब की मेंहन्दी आदि प्रमुख हैं।

मौहल्ला दरबार निवासी तबला वादक वहीद बल्लेमिया, बन्देमिया, बीन का लहरा बजाने में माहिर थे और गायकों में अब्दुल करीम खां जिनके फिल्मी रिकार्ड तहलका मचा रहे हैं, कैराना के ही रहने वाले थे। यूरोप, अमेरिका, चीन आदि की यात्रा करने वाले अब्दुल करीम खाँ कुत्तों के राग गाने में विख्यात रहे हैं उनके गीतों के एच. एम. वी. कम्पनी ने ग्रामोफोन रिकार्ड बनवाये उनकी स्मृति में भारत सरकार ने आल इंडिया रेडियो पर भी एक प्रतिमा बना रखी है तथा एच. एम. वी. रिकार्ड कम्पनी के ओडियो कैसिटों एवं रिकार्ड प्लेयरों पर कुत्ते का जो चिन्ह अंकित है वह भी कैराना

का ही कुत्ता था जिसे बाद मैं अब्दुल करीम खाँ बम्बई ले गये थे।

बहरे वहीद खाँ, अब्दुश्शकूर, नवाब सरंगी, बहरे अमीर खाँ आदि भी जो इसी कस्बे की देन है राग रागनियों में विख्यात रहे हैं।

सऊदी अरब में इस्लाम धर्म की शिक्षा व मक्का में हाजियों की सेवा हेतु चलाये जा रहे मदरसे के संस्थापक हजरत मौलाना रहमतुल्ला कैरानवी ने पादरियों से मुकाबला किया एवं अंग्रेजी फौज के खिलाफ भी लडे। कैराना के मौहल्ला दरबार के निवासी थे अंग्रेजी शासन में देश छोडकर चले गये थे। ज्ञात रहे कि इनका मदरसा अब एक इस्लामिक युनिवर्सिटी जैसा बन चुका है जहॉ कैराना से जाने वाले हज यात्रियों को विशेष सम्मान मिलता है।

मराठा काल में कैराना में करीब साढे तीन सौ वर्ष पूर्व बना देवी मन्दिर देश में अपनी तरह का पहला मन्दिर है जिसकी नींव सेवा मिरी मराठा ने रखी थी। इस मंदिर की सात मंजिलें हैं और अन्दर से पहली मंजिल से सातवीं मंजिल में पूरा कैराना नगर ही नहीं बल्कि 6 कि. मि. दूर बह रही यमुना एवं इतनी ही दूरी तक चारों ओर के ग्राम देखे जा सकते हैं। इन पैडियों में विराजमान भव्य माता दुर्गा की सुन्दर प्रतिमा के ऊपर चक्करदार जीने से आते जाते समय पैर नहीं आ सकते।

इस मंदिर का निर्माण पूर्ण करने में पंडित न्यादर मल, जो कि मंदिर के पुजारी स्वर्गीय रण्बीर शरण के दादा थे, ने कार्य किया, वर्तमान में न्यादर गिरी के वंशज राजकुमार पुजारी है। इस देवी मंदिर के सामने 12 बीघा भूमि में पक्का तालाब है जिसके आसपास संतोषी माता का मंदिर तथा स्वयं भूगर्भ से उत्पन्न प्राचीन काल का शिवलिंग व वणखण्डी महादेव मंदिर, भव्य जैन मंदिर व जैन बाग स्थित है। इसके अलावा नगर में करीब 500 वर्ष पुरानी जामा मस्जिद सहित इस समय कुल 155 छोटी बडी मस्जिद हैं जिनमें प्रतिदिन हजारों मुलसमान खुदा की इबादत करते हैं। इसके अलावा नगर में और भी कई प्राचीन धार्मिक–स्थल प्राचीन समय की याद दिला रहे हैं। यहां पर मौहल्ला छडियान में ख्वाजा मुईनुददीन चिश्ती अजमेरी की याद में सैंकडों वर्षों से हर वर्ष एक सप्ताह से दो सप्ताह तक मेला लगता है जिसमें हिन्दू मुस्लिम बढ–चढकर शामिल होते हैं बताते हैं कि चिश्ती साहब धर्म प्रचार करते हुये यहाँ आये थे और छडियान चौक पर रात्री विश्राम किया था तथा यहीं पर अपनी छड़ी गाडी थी तभी से यहाँ का मैदान छडियान मैदान के नाम से मशहूर है।

कैराना की मिर्च दुनियां भर में मशहूर है। यहाँ की मिर्च उ.प्र., हरियाणा, पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु व बम्बई तक निर्यात होती है, वहीं यहाँ पर गेहूं, चावल, आलू, गोभी, बेर आदि भी भरपूर पैदा होते हैं इसके अलावा विदेशों को निर्यात होने वाली सलहेरी भारत के लाडवा

'हरियाणा' अमृतसर 'पंजाब' व कैराना मुजफ़्फ़रनगर की छाप देशभर में प्रसिद्ध है यहाँ पर हजारों कारीगरों द्वारा प्रतिदिन हजारों मीटर देसी सूत द्वारा वस्त्र आदि बडी मात्रा में तैयार होते हैं तथा हाथ की छपाई का भी यहाँ पर कमाल है हाथ की छपाई के लिहाफ, चद्दर आदि दूर–दूर तक सप्लाई होते हैं।

साम्प्रदायिक सद्भाव और हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतीक कैराना जिसे कई बार यमुना नदी की बाढ़ ने प्रभावित किया है तथा महाभारत में भी मुख्य केन्द्र रहा है, आज शासन व प्रशासन की उपेक्षा का शिकार है। यहाँ के निवासी चौ. अख्तर हसन 'पूर्व सांसद' एवं बाबू हुकुम सिह 'पूर्व कैबिनेट मंत्री' तथा पूर्व विधायक बशीर अहमद व वर्तमान सांसद चौ. मुनव्वर हसन ने इसको पर्यटन स्थल बनाने एवं अन्य सौन्दर्यकरण करने का प्रयास तो ज़रूर किया लेकिन यह सब प्रयास ....हुये जबकि इस क्षेत्र के ग्राम बीलड़ा निवासी स्व. चौ. नारायण सिंह उ.प्र. के उप मुख्य मंत्री भी रह चुके हैं तथा पूर्व प्रधानमंत्री चौ. चरण सिंह की धर्मपत्नि श्रीमती गायत्री देवी भी कैराना से सांसद चुनकर लोकसभा में पहुंच चुकी हैं।

कैराना पत्रकारिता जगत में अग्रणी रहा है यहां से उस समय सन 1936 ई. में 'जरूरत' नामक साप्ताहिक अखबार का प्रकाशन स्व. देवीचन्द बिस्मिल द्वारा प्रारम्भ किया गया था जब जनपद मुजफ़्फ़र नगर से कोई अखबार नहीं निकलता था बल्कि मेरठ से मात्र एक समाचार पत्र 'क्रांति' निकलता था। स्व. देवी चन्द बिस्मिल द्वारा प्रारम्भ 'जरूरत' साप्ताहिक को उर्दू भाषा में शुरू किया गया था जो 1960 से 1980 तक छपने के बाद बिस्मिल के स्वर्ग सिधारने के कारण बंद हो गया।

पत्रकारिता में रूचि रखने वाले स्व. पंडित जवाहर लाल नेहरू 'पूर्व प्रधान मंत्री' भी बिस्मिल से मिलने कैराना आये थे। वर्तमान समय में कहने को तो यहाँ से एक दर्जन साप्ताहिक एवं पाक्षिक समाचार पत्रों को प्रकाशन होता है लेकिन सरकारी उपेक्षा एवं आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण यह समाचार पत्र नियमित नहीं छप रहे हैं और कई लगभग बंद होने की स्थिति में हैं। कैराना व ग्रामीण क्षेत्र के जुझारू एवं खोजी पत्रकारों ने यहाँ पर समय–समय पर अनेकों रहस्यों से पर्दा उठाने के साथ ही ग्रामीण व नगर क्षेत्र में व्याप्त जटिल समस्याओं को उठाकर सरकार को अवगत कराकर उनका समाधान कराने में भरपूर योगदान दिया है।

कुल मिलाकर कैराना भारत में जहाँ एक ओर अपना एक विशेष स्थान रखता है वहीं दूसरी ओर वर्तमान समय में विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है। जिस कारण यहाँ का आम नागरिक रोजगार की तलाश में निकटवर्ती कस्बों में अपनी जीविका के स्रोत ढूँढने को विवश है।

–0–0–

करीम–उल–अहसानी

हिन्दी रूपान्तरः उमर कैरानवी, प्रस्तुतः कौसर ज़ैदी कैरानवी साहब

1972 के आल इण्डिया मुशायरा में प्रसिद्ध शायर करीम–उल–अहसानी का

कैराना के इतिहास पर ऐतिहासिक भाषण

यह वह सरज़मीन पाक है कि जिस पर हज़रत ख़्वाजा गरीब नवाज मुईनुददीन चिश्ती अजमेरी ने क्याम फरमाया।

यह वह काबिले ताज़ीम कस्बा है कि जहॉ उस्ताद अब्दुल करीम खॉ ने जन्म लिया और अपनी मौसीक़ी से हिन्दुस्तान का नाम बुलन्द किया जिनके स्टेचू आज भी कई रेडियो स्टेशनों पर बने हुए हैं।

यह वह मुक़द्दस धरती है कि जिसने मशहूर जमॉ गुलूकार अब्दुल वहीद खॉ को पैदा किया, जिनके हिन्द व पाक में आज भी बेशुमार शागिर्द मकबूल और मशहूर हैं।

यह वह कैराना है कि जहॉ से शकूर खॉ सारंगी नवाज उठे और अपने फन से रूस, अफगानिस्तान तक को मसहूर करके भारत का नाम रौशन किया और पदम श्री का खिताब पाकर कैराना की अज़्मत को चार चॉद अता किये।

यह वह कैराना है कि जिसने मुन्शी मुनक्का ऐसे तन्ज़ और मज़ाह गो शायर पैदा किये इसी कैराना ने डाक्टर तनवीर अल्वी से उस्ताद ज़ौक़ को ज़िन्दा जावेद कराया, और इसी कैराना ने शबाब कैरानवी को फिल्म इण्डस्ट्री पाकिस्तान में एक अहम मुकाम दिया।

तारीख में कैराना की हमेशा एक अहम्मियत रही है, यहॉ के काश्तकार हिन्दुस्तान में सबसे ज़ियादा गल्ला और मिर्च पैदा करते हैं लेकिन वह आज भी साहूकार के मक़रूज़ हैं।

कैराना की एक खास अहम्मियत जमना के पुल से भी हुई है, इस पुल ने पंजाब, हरियाणा और देहली को यू.पी. से बहुत ही क़रीब कर दिया है, आज इसी कैराना में जानिबे जनूब और मशरिक़ मशहूर मेला छडियान की तक़रीबात के सिलसिले में एक महफिले शेअर ओ शुखन मुनअकिद हो रही है।

नोटः मुशायरे की उर्दू में सम्पूर्ण कमेन्टरी वेबसाइट में पढ सकते हैं।

....

उर्दू लेखः उमर कैरानवी
हिन्दी अनुवाद : तनवीर गौहर

योद्धा सृष्टा :

मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी ;रह. द्ध

गदर–1857–आगरा में ईसाईयों से मौखिक युद्ध–मक्का में मदरसा सौलतिया

;आज जो हम मुसलमान और हिन्दू आदि हैं तो हजरत कैरानवी के कारण, अन्यथा अंग्रेजों ने सभी को ईसाई बना दिया होता।द्ध

योद्धा सृष्टा, इमामुल मनाजिरीन और बानीये दारूल उलूम हरम मदरसा सौलतिया मक्का मुअज्जमा हज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी जमादीउल अव्वल 1233 हिजरी को कस्बा कैराना ;जिला मुजफ़्फ़रनगर, यू.पी.द्ध में पैदा हुये। आप के जद्दे आला ;पूर्वज पितामहद्ध शेख अब्दुर्रहमान गाजरोनी थे जो सलतनत महमूद के साथ हिन्दुस्तान आये और पानीपत में निवास कर लिया आप के जन्म से पूर्व माता ने सपना देखा कि तेरे यहाँ चाँद समान पुत्र पैदा होगा और उसका प्रकाश समस्त संसार में फैलेगा! मौलाना रहमतुल्ला ने 12 वर्ष की आयु में कुरान मजीद स्मरण कर दीनियात और फारसी की प्राथमिक पुस्तकें अपने बडों से पढ़ी। तत्पश्चात शिक्षा ग्रहण हेतु देहली प्रस्थान किया और मौलाना मौहम्मद हयात साहब के मदरसे में प्रविष्ट हुये, मौलाना मौहम्मद हयात के मदरसे के विषय में सर सैयद ने लिखा है कि आप की शिक्षा के प्रसार से निम्न श्रेणी का शिक्षार्थी उस वक़्त के विद्वानों से उच्च कोटि का माना जाता था। दूसरे महत्वपूर्ण शिक्षक मौलाना अब्दुर्रहमान चिश्ती थे जो उस्ताद शाहे वक्त हयात साहब के शिष्यों मे थे और सम्पूर्ण ज्ञान में दक्षता रखते थे। हकीम फैज मौहम्मद साहब जो कि अपने जमाने के प्रसिद्ध एवं योग्य चिकित्सक थे, उन से ज्ञानर्जन किया। आप का शजरा नसब ;वंश लता द्ध से ज्ञात होता है कि हर युग में इस वंश ने चिकित्सा सेवा की है मुगल बादशाह जहाँगीर के वज़ीर नवाब मुकर्रब खाँ कैरानवी ने चिकित्सकीय सेवा के साथ साथ महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किये थे। लेखक लोकारनम से गणित की शिक्षा पायी, दूषित वातावरण और हिन्दुस्तान में ईसाईयत के बढते हुये प्रभुत्व को रोकने की चिंता ने आपको इस का अवसर न दिया

कि आप अपनी शिक्षा को यथावत जारी रख सकें।

दरबार कैराना की मस्जिद में मौलाना ने एक दीनी मदरसा स्थापित किया इस मदरसे से लाभान्वित शिक्षार्थियों में मौलाना अब्दुस्समी, लेखक 'हम्द बारी' योग्य विद्यार्थी प्रसिद्ध हुये।

मौलाना मरहूम की शादी 1256 हिजरी में अपनी खाला की लडकी से हुई। देहली में महाराजा हिन्दुराव के यहाँ अमीर मुन्शी बन कर रहे कुछ घरेलू मजबूरियों के कारण मौलाना को कैराना वापिस आना पडा, कैराना पहूँचकर पठन तथा पाठन के साथ रददे नसारा ;ईसाईयत के विरोध मेंद्ध पर महत्वपूर्ण पुस्तक, इजालतुल औहाम लिखनी शुरू की, इस पुस्तक की छपाई के दौरान ही मौलाना बहुत बीमार हो गये एक रोज मौलाना फजर की नमाज के पश्चात रोने लगे सम्बन्धियों ने समझा कि आप जीवन से निराश हो गये हैं। आपने बताया कि ब खुदा स्वस्थ होने का कोई लक्षण नहीं परन्तु आराम होगा इन्शा अल्लाह, रोने का कारण यह है कि सपने में हजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये, हजरत सिददीके अकबर साथ हैं। हजरत फरमाते हैं ए जवान! तेरे लिये रसूलुल्लाह की यह खुशखबरी है अगर तकलीफ 'इजालतुल औहाम' की वजह है तो वही आराम की वजह भी होगी, अल्हम्दु लिल्लाह वह स्वस्थ हो गये। इस पुस्तक में ईसाईयत के अकसर प्रश्नों के उत्तर हैं। इजालतुल औहाम के छपने से पहले ही देहली में काफी प्रसिद्धि हो गई जिस का विरोध भी प्रारम्भ होगया इस कारण मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी ने उस समय के योग्य विद्वान मौलाना नूरूल हसन साहब कॉधलवी को छपाई हेतु तैयार कागजात संशोधन के लिये भेजे थे, मौलाना रहमतुल्लाह साहब इजालतुल औहाम की छपाई के विषय में देहली आये तो उन की भेंट डाक्टर वजीर खाँ से हुई जो मौलाना रहमतुल्लाह के सच्चे सहायक मित्र सिद्ध हुये। डाक्टर साहब आगरे में अंग्रजी चिकित्सालय में प्रतिष्ठित पद पर सुशोभित थे। अंग्रेजी की उच्च शिक्षा के कारण अंग्रेजी अवतरणों की व्याख्या करने में मौलाना के सहायक बन गये मौलाना ने उनको कई स्थान पर रहमत के फरिशते जैसा बताया है। डाक्टर वजीर खाँ जब डाक्टरी की डिग्री लेने इंग्लेण्ड गये तो वहाँ से ईसाईयों की बहुत सी धार्मिक पुस्तकें साथ लेते आये उन पुस्तकों का अवलोकन आगरे के मुनाजिरे ;तर्क वितर्क द्ध में बहुत काम आया, डाक्टर साहब अंग्रेजी के अलावा इबरानी यहूदी भाषा भी जानते थे। आगरे में ईसाई पादरी, उलमा के मौनधारण से अनुचित लाभ उठाते थे और जनता में परोपेगन्डा करते फिरते थे कि हमारे धर्म की सत्यता का भय इतना है कि हिन्दुस्तानी

विद्वान हमारे तर्क का उत्तर नहीं दे सकते और अपने धर्म इस्लाम की सत्यता सिद्ध नहीं कर सकते इसी बीच मौलाना रहमतुल्लाह वजीर खाँ के निमन्त्रण पर आगरे गए, आगरे में मौलाना के दो मुनाजरे हुए जो कि छोटा मुनाजरा, बडा मुनाजरा के नाम से प्रसिद्ध हैं। छोटा मुनाजरा दो तीन पादरी मौलाना रहमतुल्लाह और डाक्टर वजीर खाँ के बीच हुआ जिस में पादरियों को पराजय का मुँह देखना पडा लेकिन यह बात उन लोगों तक ही सीमित रही इस कारणवश मौलाना ने बडे मुनाजरे की तैयारी की ताकि दुनिया देखे और सुने। मौलाना की कोशिशों से पादरी फन्डर आम मुनाजरे के लिये तैयार हुआ शर्त यह तय पायी कि जो हार जायेगा दूसरे का धर्म स्वीकार कर लेगा। मुनाजरा तीन दिन चलना था मगर दो रोज की पराजय ने पादरियों को तीसरे दिन मुँह दिखाने के काबिल न छोडा और वह न आए। मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी और डाक्टर वजीर खाँ ने इन्जील, बाईबिल के जो नुसखे जमा किये थे उन्हें भरे मजमे में दिखाकर यह साबित किया कि किसी में कुछ हटा दिया गया किसी में कुछ बढा दिया गया, भरे मजमे में पादरियों को इन्जील ;बाईबिलद्ध में परिवर्तन स्वीकार करना पडा। मुनाजिरे ;तर्क वितर्कद्ध से पादरियों की शिकस्त का लाभ यह हुआ कि पादरियों का जोर शोर घट गया और उन्होंने धर्म प्रचार व प्रसार की पुस्तकें जो अधिकतर बाँटते थे एक दम बाँटना छोड दी, मौलाना और भी बडा मुनाजरा करना चाहते थे मगर पादरी फन्डर हिन्दुस्तान ही से चला गया बाद में मौलाना रहमतुल्ला कैरानवी साहब से कुस्तुनतुनिया में पादरी फन्डर टकराता मगर मौलाना की आगमन की खबर मिलते ही वह वहाँ से भी चला गया। ईसाईयत की रही सही कसर मौलाना के शागिर्दो ने तोड दी। मौलाना शरफुल हक़ वालिद इमदाद साबरी ने मौलाना रहमतुल्लाह से मुनाजरे की इजाजत लेकर ईसाईयों से सैकडों मुनाजरे किये अल्हमदु लिल्लाह सबमें पादरियों को हार हुई।

मौलाना रहमतुल्लाह साहब की पुस्तकें और मुनाजरे ईसाईयों के उत्तर में कलमी जिहाद था और प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम 1857 की भूमिका साबित हुई। मेरठ के धर्म योद्धाओं ने स्वतन्त्रता का युद्ध प्रारम्भ कर दिया। अन्य यौद्धाओं के साथ मौलाना रहमतुल्ला कैरानवी ने भी स्वतन्त्रता संग्राम में बढ चढकर हिस्सा लिया और जंग में अपने मित्र डा. वजीर खाँ और मौलवी फेज अहमद बदाँयूनी के साथ स्वतन्त्रता संग्राम मे सम्मिलित हुए। कस्बा कैराना में जमींदारी शेखों व गूजरों के हाथों में अधिक थी जिनमें नैतिक गुण

तथा उत्साह यौवन पर था। थानाभवन और कैराना का एक मोर्चा स्थापित किया गया, योद्धा मुकाबला करते रहे। शामली की तहसील पर हमला किया गया। थानाभवन का मोर्चा हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की तथा कैराना का मोर्चा मौलाना रहमतुल्ला कैरानवी संभाले हुए थे। उस जमाने में शाम की नमाज के बाद धर्म यौद्वाओं के संगठन व दीक्षा के लिए नक्कारे की आवाज पर एकत्रित किया जाता और ऐलान होताः ''मुल्क खुदा का और हुक्म मौलवी रहमतुल्लाह का'' शामली की तहसील तोडने में हाफिज जामिन साहब शहीद हुए, इन्हीं कारणवश मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी का वारन्ट जारी कर दिया गया, मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी ने पंजीठ में पनाह ली। अंग्रेज फौज ने गाँव वालों को परेशान किया जिस पर मौलाना ने कहा इस से अच्छा हो कि मैं गिरफ़्तार हो जाऊँ, इस पर गाँव के चौधरी अज़ीम साहब ने कहा कि अगर पूरा गाँव भी गिरफ़्तार हो जाए और उनको फाँसी पर लटका दिया जाए तो ऐसे वक्त भी आपको फौज के हवाले नहीं किया जाएगा, ऐसे बलिदानी थे मौलाना के मित्रगण, यहाँ यह तथ्य उल्लेखनिय है कि इन महान स्वतनत्रता सैनानियों की पाठय पुस्तकों के इतिहास में उपेक्षा की जा रही है। इन्हीं दिनों में मौलाना रहमतुल्लाह अपना नाम मुसलिहुददीन रख कर दिल्ली रवाना हुए और जयपुर व जौधपुर के खतरनाक जंगलों को पैदल तय करते हुए सूरत बन्दरगाह पहूँचे, सूरत से हज के लिए रवाना हुए एक लम्बे और कठिनाईयों से परिपूर्ण यात्रा करके अल्लाह पर विश्वास करते हुए मक्का मुअज्जमा महुँचे ताकि अल्लाह के घर शान्त वातावरण में इस्लाम को फैला सकें। 1857 में शिक्षा जगत के नायक मौलाना मौहम्मद कासिम थे जिन्होंने देवबन्द में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए एक छावनी स्थापित की बाद में उसका नाम मदरसा देवबन्द रखा गया। जिसे दारूल उलूम देवबन्द के नाम से एतिहासिक प्रसिद्धि प्राप्त है। मौलाना मौहम्मद कासिम का दृष्टिकोण था ''शिक्षा एक शक्ति है'' मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी ने भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार एक मदरसा स्थापित किया जिसका नाम मदरसा सौलतिया रखा गया। धार्मिक शिक्षा मक्का से चलकर हिन्दुस्तान आयी और हिन्दुस्तानी विद्वान मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी का यह चमत्कार है कि उन्होंने इस ज्ञान को पुनः मक्का पहुँचा दिया उनके समय से यह शिक्षा केन्द्र ज्ञान की ज्योति तथा धर्म की सेवा निरन्तर कर रहा है।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के हाजी जब मक्क़ा जाते हैं तो इस मदरसे को देख कर गर्व महसूस करते हैं।

वर्तमान काल के लोकप्रिय कवि कलीम अहमद 'आजिज' मदरसा सौलतिया का परिचय अपनी रचना 'यहाँ से मदीना, मदीना से काबा' में यूँ देते हैं:

''यह मदरसे का मदरसा है खानकाह की खानकाह है, दफ्तर का दफ्तर है, सराय की सराय है जो जिस कैफियत का इच्छुक हो वह मिलेगी। यह एक ऐसी संस्था है जो सदियों पहले हुआ करती थी यहाँ शिक्षा का अभिलाषी ज्ञानार्जन कर सकता है बुद्धि के इच्छुक को बुद्धि मिलेगी, जुनूँ के दिवानों को जुनूँ प्राप्त होता है, मुहब्बत चाहिए तो जितनी चाहिए उससे ज्यादा मिले रोटी कपडा मकान चाहिए तो बकदरे जर्फ वो भी मौजूद है फतवा चाहिए तो फत्वा हाजिर, अमानत रखनी हो तो आजाओ छोड जाओ ये घर तुम्हारा घर है, अमानत वापिस लेनी चाहो तो वह पडी है उठालो, साहित्य चाहिये तो सुबहान अल्लाह वो भी हाज़िर, संक्षिप्त यह कि मानवता का डिपार्टमेन्टल स्टोर है''।

वर्तमान मौलाना रहमतुल्ला की कई रचनाएं बाजार में उपलब्ध नहीं अब फरीद बुक डिपो,नई दिल्ली ने उर्दू में ''मुजाहिद–ए–इस्लाम मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी'' पुस्तक छापकर इस कमी को दूर किया है। मौजूदा अध्यक्ष मौलाना हशीम साहब ने एक बार टेलीफोन वार्ता में बताया कि मौलाना से मुताल्लिक पुस्तकें आदि पोस्ट बाक्स न. 114, मदरसा सौलतिया, मक्का से मुफ़्त मंगायी जा सकती हैं। मदरसे की वेबसाइटूंएंसूंसंजपलीण्बवउ जो अभी अर्बी में है उसे जल्द ही उर्दू और इण्डोनेशियन में भी कर दिया जाएगा।

उपलब्ध पुस्तकें 'इजालतुश्शुकूक'' में ईसाईयों के 29 सवालों के जवाब हैं और उसमें मौहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्ल्म के नबी होने पर और इन्जील ईसाईयों की धार्मिक पुस्तक में रददो बदल साबित की गयी है।

पुस्तक ऐजाज–ए–ईसवी में मौलाना ने इन्जील का अविश्वसनीय होना सिद्ध किया है।

पुस्तक इजहारूल हक़ जो असल अरबी भाषा में है मौलाना की अन्तिम आयु की है जिसका कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। अंग्रेजी संस्करण लन्दन से छपा है जिसका विवरण कैराना वेबसाइट कैराना डोट नेट पर देख सकते हैं। इस पुस्तक की तैयारी में मौलाना ने अरबी,फ़ारसी, उर्दू और दूसरी भाषाओं की पुस्तकों का अवलोकन करने के पश्चात जब ईसाईयत पर अंतिम बार कलम उठायी तो वह गौरवशाली रचना बन गयी जिसने ईसाई संसार में

तहलका मचा दिया, लन्दन टाइम्स ने पुस्तक इजहार उल हक पर टिप्पणी करते हुए लिखा है 'अगर लोग इस पुस्तक को पढते रहे तो मजहबे ईसा की तरकी बन्द हो जायगी' इस्लामी विद्वानों की ओर से जितनी पुस्तके ईसाईयत की रोकथाम में लिखी गयी सब इजहार उल हक की रोशनी में लिखी गयीं। मौलाना अशरफ अली थानवी बयानुल कुरआन में, मौलाना हिफजुर्रहमान ने किससुल कुरआन में, मौलाना मौहम्मद अली ने पेगाम–ए– मौहम्मदी में आपकी पुस्तकों की बहुत प्रशंसा की है। कादयानियत के मुकाबले में अल्लामा कश्मीरी मैदान में आये तो आपके अवलोकन में मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी की रचनाऐं रहा करतीं और प्रार्थना किया करते ' अल्लाह मौलाना रहमतुल्ला को जजाऐ खेर अता फरमाए कि उनकी पुस्तकें इस्लामी विचारधारा की सुरक्षा में अद्वितीय है खुदा न करे वक्त पडने पर हमारे धार्मिक विद्वानों को परेशान होने की आवश्यकता नहीं ।

मौलाना का देहान्त रमजानुल मुबारक में 1308 हिजरी, 1861 ई. में हुआ। आपकी कब्र मक्का जन्नतुल मुअल्ला नामक कब्रिस्तान में है, पहलू में हाजी इमदादुल्लाह महाजिर मक्की भी दफन हैं।

उर्दू, अरबी और अंग्रेज़ी मैं अधिक जानकारी के साथ मदरसा सौलतिया आदि के चित्र देखें कैराना वेबसाइट कैराना डोट नेट पर।

0ऋ0ऋ0

उमर कैरानवी

पानीपत में स्थापित दुर्लभ व बहुमूल्य कसौटी स्तम्भों का कैराना से संबन्ध

बहुत समय से समुद्र में जलमग्न जलयानों से सम्राट जहाँगीर के बुद्विमान मन्त्राी नवाब मुकर्रब खाँ कैरानवी ने किस युक्ति का प्रयोग करके सामान प्राप्त किया था यह आज भी रहस्य है। क्योंकि उस समय तक समुंद्र में विचरने के आधुनिक उपकरणों का चलन नहीं हुआ था।नवाब साहब उस समय गुजरात के गवर्नर थे यह जलयान सूरत बंदरगाह पर डूबे हुए थे। प्राप्त सामान में बहुमूल्य व दुर्लभ कसौटी पत्थर के स्तम्भ भी थे, सभी सामान को सम्राट ने नवाब को ही भेंट स्वरूप दे दिया था जिन्हें नवाब ने अपने तालाब के साथ बनी इमारत में फिर बू अली शाह कलंदर पानीपती के मज़ार पर चढ़ा दिये थे। सौभाग्य से अच्छे प्रबन्ध के कारण जो आज भी सुसज्जित हैं।

कसौटी पत्थर के पानीपत पहुँचने से संबन्धित इमदाद साबरी साहब उर्दू पुस्तक ''आसारे रहमत'' में लिखा है कि जब सम्राट जहॉगीर ने कैराना के नवाब को यह स्तम्भ सहित सामान भेंट किया तब वह इसके महत्व से अपरिचित थे, दरबारी के बताने पर उसने नवाब के नाम आदेश भेजा कि कसौटी पत्थर के स्तम्भों को हमें भेज दिया जाए। तब संदेश से पहले ही नवाब के शुभचिंतक ने आदेश से अवगत करा दिया था, नवाब का रत्नों से बहुत लगाव था विशेष रूप से इन स्तम्भों से, इन्हें बडी चतुरता से अपने निकट ही रखने की युक्ति निकाल ली, रात्राी में ही यह स्तम्भ उखड़वाकर कलंदर साहब के मज़ार में स्थापित करा दिये गये, जब आदेश आया तो उत्तर में लिख दिया कि आपके आदेश आने से पहले ही स्तम्भ कलंदर शाह पानीपती के मज़ार में स्थापित करा चुका हूँ, आदेश हो तो उखडवाकर भेजे जायें। सम्राट की क्या मजाल कि मज़ार से स्तम्भ उखड़वाये। इन्हीं स्तम्भों जैसे स्तम्भ उसी स्थान पर नवाब ने अपने तालाब किनारे के महल के चबूतरे पर लगवाये जो अब गिरे कि तब गिरे की अवस्था में हैं। उस्ताद महमूद खॉ स़फी कैरानवी, अपनी मन्ज़ूम उर्दू पुस्तक ''कैराना शरीफ़'' में जो वेबसाइट कैराना डाट नेट पर उपलब्ध है। इस बारे में लिखते हैं

बनी है सरे हौज़ जो सह दरी
कसौटी के थाम से मुज़ैयन वह थी
वह थाम अब कलन्दर में पहुँचा दिये
कि दुनिया में कोई न फिर ले सके।

सौभाग्य से नवाब मुकर्रब खाँ के सुपुत्रा हकीम रिज़कुल्लाह खाँ कैरानवी भी रत्नों के ज्ञानी थे उन्होंने पिता का मज़ार कलंदर साहब के पास ही बनवाया जिसमें बहुमूल्य रत्न ज़हर मोहरा का प्रयोग किया गया है व बाहरी दीवारों पर कई प्रकार के पत्थर लगवाये एवं ऐसे पत्थर भी लगवाये जिनसे ऋतु ;मौसमद्ध का पूर्व ही अनुमान लगया जा सके लेकिन इस युग में हम आधुनिक साधन सम्पन्न रत्न ज्ञान से अपरिचित हैं जिस कारण यह दुर्लभ पत्थर भी साधारण बन कर रह

गये हैं।

नवाब के सुपुत्रा ने कई जगह नवाब मुकर्रब खाँ कैरानवी शिलापट पर लिखवाया है यह शोध करने योग्य है कि जाने क्यों कैराना में नवाब मुकर्रब अली खाँ प्रचलित है जबकि जहाँगीर ने उनको ''मुकर्रब खाँ'' ;मुकर्रब=अति निकटद्ध की उपाधि दी थी।

बूअली शाह का मज़ार, कसौटी स्तम्भ, नवाब मुकर्रब खाँ का मज़ार एवं मौसमी पत्थर के चित्रा व अधिक जानकारी कैराना की वेबसाइटकैराना डाट नेट पर देख सकते हैं।

0त्र0त्र0त्र0त्र0

रिपोर्ट : अज़मत कैरानवी
संवाद दाताः राष्ट्रीय सहारा, 2005

()यावर हॉस्पिटल का शुभारम्भ()

कैराना में चैरिटैबल हास्पिटल का शुभारम्भ
एवं नर्सिंग कालिज का संकल्प

कैराना 8 सितम्बर 2005, रोगी की सेवा और उपचार पुण्य का काम है। 7 सितम्बर की शाम को मेम्बर पारलियामेन्ट चौधरी मुनव्वर हसन ने यावर चैरिटैबल हास्पिटल का शुभारम्भ करते हुए कहा कि हॉस्पिटल के संस्थापक अली हैदर ज़ैदी ने इलाके की जनता को एक अहम तोहफा दिया है। उन्होंने कहा कि अब किसी भी ग़रीब रोगी को एमरजेन्सी के समय कैराना से बाहर नहीं जाना पडेगा और शायर अदीब कौसर जैदी जो अली हैदर के बडे भाई हैं इनकी सरपरस्ती में यह हास्पिटल लक्ष्य को प्राप्त करेगा। ज्ञात हो कि हास्पिटल में आधुनिक मशीनें और उच्च शिक्षित प्रशिक्षित डाक्टर हैं एवं बाल रोग एवं प्रसूती का विशेष आधुनिक प्रबन्ध है। 70 बैड का यह हास्पिटल शहर के मध्य में है।

इस मौक़े पर अली हैदर ज़ैदी ने अपने हलकए अहबाब, शहर चैयर मैन हाजी अब्दुल अज़ीज़ अन्सारी और चौधरी मुनव्वर हसन का धन्यवाद अदा किया जिनका हास्पिटल की ता'मीर में अहम रोल था। उन्होंने कहा कि जल्द ही इन्शाअल्लाह क़स्बा कैराना में एक नर्सिंग कालिज एवं गर्लस इन्टर कालिज बनाया जायेगा। कौसर ज़ैदी ने कैराना और आसपास वालो को यावर हास्पिटल के बनने पर मुबारकबाद दी।

प्रोग्राम के संचालन की जिम्मेदारी बुजुर्ग शायर मुज़फ्फर रज़्मी ने अदा किये। इस मौक़े पर हिमालय ड्रगस के डा. एस फारूक़, प्रो. तनवीर चिश्ती, डा. आई ए दास आदि ने ख़िताब किया। तक़रीब में अन्जुमन फरोगे उर्दू अदब के सदर अन्सार सिद्दीक़ी, रियासत अली ताबिश, हाजी सग़ीर अहमद, डा. खुर्शीद अनवर, डा. बहल, डा. कुँवर मेहबूब, डा. शिवदत, शबीर हैदर, साजिद अली, एस.डी.एम कैराना, सी.ओ. कैराना, कोतवाल कैराना, सैयद साजिद हुसैन–झिन्झाना, अली मियाँ, अनीस अहमद उर्फ छोटा, वसीउल हसन, सरवर हुसैन, इशरत हुसैन, इन्तज़ार हुसैन, नफीस कुरैशी, कलीम अहमद मंगलोरी, डा. ऐवज़ अली, अबरार सिद्दीक़ी वगैरह ने खास तौर पर शिरकत की।

;चैण रू 01398.268157 .. मउंपसरू लंअंतत्रहीवेचपजंस/लीववण्बवण्पदद्ध

उमर कैरानवी

शामली तहसील का कैराना स्थान्तरित हो जाना और शामली में गदर–1857 ई. की एक जंग जीत लेना झोंपडी से

यहॉ आस पास के सभी कस्बों गाँवों का इतिहास महत्वपूर्ण है। थानाभवन के हाफिज़ ज़ामिन शहीद, कैराना के मौलाना रेहमतुल्लाह कैरानवी जिन्हें मेमार–ए–मुजाहिद अर्थात योद्धा श्रष्टा की उपाधि दी गयी का गदर में महत्वपूर्ण रोल रहा है कुछ दूरी पर देवबन्द, सहारनपुर और गंगोह के गदर नायकों पर बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं।

शाही दौर मैं कैराना का महत्व रहा तो अंग्रेज़ी शासनकाल में शामली की बहुत उन्नति हुई, शामली का उस समय इस क्षेत्रा का लडाईयों का केन्द्र होने के कारण यहॉ फौजी छाँवनियाँ बनाई गयी, जिससे चारों और फौज भेजी जा सके, इसी उन्नति की देन यहाँ पर कचहरी होना भी था। जिसका ऐतिहासिक पुस्तकों में वर्णन से पता चलता है कि यह बहुत बडा महल था जिसको कचहरी का रूप दे दिया गया था और गदर–1857 में यही महल फौजी छावनी बन गया था। इस महल का मुख्य प्रवेश द्वार विशाल था। अब उस स्थान पर सहारपुर बस स्टेंड है।

गदर में पूरे देश में आग लगी थी तब क्षेत्रावासियों में अमन व सकून कहाँ था, देश के दुशमनों को यहाँ भी ज़ोरदार टक्कर दी जारही थी। एक बार हमारे वीरों का ऐसा भी दिन आया कि शामली की अंग्रेज़ी फौज को हरा दिया, बचे हुए फौजियों ने तहसील शामली में पनाह ली और विशाल प्रवेश द्वार बन्द कर लिया। अंग्रेजों कि फौज अन्दर आड से गोलाबारी करती रही हमारे युद्धवीर बगैर किसी आड के सीना ताने खडे थे, हथियार भी उनके पास आधुनिक न थे। अंग्रेज फौज को यह मौक़ा मिलता तो वह तुरन्त गोला बारूद से द्वार उडा देती और महल पर कब्ज़ा कर लेती।

इन युद्धवीरों में रशीद अहमद गंगोही, हाफिज ज़ामिन शहीद और मौलाना मौहम्म्द क़ासिम साहब जिन्होंने देवबन्द मदरसे की स्थापना की थी का नाम पुस्तकों में मिलता है। इसी गोलाबारी में क़ासिम साहब को युक्ति महल में

घुसने की सूझी जिसे यूँ अपनाया गया कि महल के पास बनी एक झोपड़ी को तहसील के प्रवेश द्वार के साथ रख कर जला दिया गया। जिससे महल का द्वार जल गया फिर हमारे वीरों ने फौज तो फौज तहसील की ईन्ट से ईन्ट बजा दी जिससे उस पल शामली पर पूरी तरह हमारे वीरों का कबजा हो गया। इस जंग में हाफिज ज़ामिन शहीद हो गये उनकी नाफ पर गोली लगी थी।

इसी कारण कुछ समय पश्चात तहसील कैराना में बनाई गई जो कि सदैव अमन की धरती रही है।

अधिक विस्तृत विवरण के लिऐ पढें उर्दू पुस्तक ''जिहादे शामली व थानाभवन'' जो कि पाकिस्तान से छपी है और दिल्ली से छपी 'कौमी महाज़े आज़ादी में यू.पी. के मुसलमान''।

Mr. Aslam Siddiqui Kairanvi (Ex-Deputy Managing Director, National Bank of Pakistan)

Profile: Mr. Aslam Siddiqui was born in 1915 in Kairana. He was the second son of Mrs. & Mr. Mukrim Siddiqui. His primary schooling was done in the English Middle School, Kairana and afterwards he moved to Jodhpur for further studies. He passed grade eighth examination from Oswal Middle School, Mahamandir, grade tenth from Darbar High School and grade twelfth from Jaswant College, Jodhpur. In July 1935, He joined Allahabad University as a student of Faculty of Commerce and lived there as a resident in famous Hostel Holland Hall's room no. 61 in the proximity of Jawahar Lal Nehru's ancestral home Anand Bhawan. At that time Anand Bhawan and Swaraj Bhawan were the hub of political activities of Indian Freedom Fighters. He graduated from Allahabad University in 1937 and was selected for U.P. Local Fund Account Service by Public Service Commision in the same year. As an auditor he travelled throughout U.P. for nine years. He resigned from Government service in 1946 and joined Habib Bank Limited in Bombay as Selective Service Officer. At the time of partition he was the manager of the Chandni Chowk branch of Habib Bank in Delhi. The same time he moved to Pakistan and adopted it as his utopia. He held senior positions as Deputy Managing Director, National Bank of Pakistan and the Industrial Development Bank of Pakistan. In 1967 he was appointed Managing Director of Commerce bank of Pakistan Ltd. and held this position until nationalization of banks in January 1974 by the Zulfi Bhutto Government. In May 1974 he migrated to Hong Kong and joined the Bank of Credit and Commerce International (BCCI) as its Chief Representative for the Far East and South-east Asia and Managing Director BCCI Finance International Limited, Hong Kong. He resigned from these positions in March 1982 and set up his own business in Hong Kong as a financial consultant and security and exchange trader. He has written an autobiography entitled, "Life and Times of a Pakistani Citizen" published by Ferozsons Private Limited Lahore. In this book he has given vivid description of Kairana and the princely state of Marwar Jodhpur during his childhood days.

(Thanks: **Faisal Ansari kairanvi**)

उमर कैरानवी

कैराना का नवाब तालाब

कथन है कि सम्राट जहाँगीर के युग में कैराना में एक वैद्य बडे सिद्व पुरूष जिनकी सेवा में जिन्नात ;दैत्यद्ध भी रहते थे । जिनके चर्चित होने में एक लकडी का बहुत महत्व है, वह लकडी आपको कैसे प्राप्त हुई इस बारे में कहा जाता है एक लकडहारा जंगल से काटी लकडियां लिये जा रहा था जिस पर वैद्य साहब की दृष्टि पडी, देखते हैं कि उसका सारा भीतरी शरीर दिखायी दे रहा है, जिस से लकडहारा अनभिज्ञ था। वैद्य साहब ने सभी लकडियों का मूल्य चुकाकर हर लकडी को उसके सर पर रख कर देखा विशेष लकडी प्राप्त होने पर शेष लकडियां वापस कर दीं।

कुछ समय पश्चात सम्राट जहाँगीर की पत्नी के पेट में दर्द हुआ तो सभी वैद्यों के नाकाम होने पर कैराना के वैद्य से चिकित्सा कराने का सुझाव दिया गया, कैराना के प्रसिद्व वैद्य को बुलवाया गया, वैद्य साहब ने रानी के सर पर लकडी रख कर देखा, फिर सम्राट से कहा कि रानी गर्भ से है व बच्चे ने उसकी अंतडी को अपनी मुटठी में भींच रखा है, इसे छुडाने की युक्ति के लिए इतनी राख मंगायी जाय कि रानी उस पर कुछ दूरी तक टहल सके व आरम्भ से कुछ दूरी छोडकर गोखरू कांटे मिली राख बिछायी जाये जिससे रानी को सुचित न किया जाऐ, ऐसा ही किया गया। जब रानी उस राख पर चलने लगी, अचानक जैसे ही रानी के पैर के नीचे गोखरू कान्टा आया, रानी को झटका लगा जिससे बच्चे की पकड छूट गयी व रानी ठीक हो गयी। सम्राट बहुत प्रसन्न हुआ और कैराना को भेंट स्वरूप दे दिया। आगे कथन इस प्रकार है कि इन्हीं वैद्य साहब के सुपुत्रा नवाब मुकर्रब खाँ ने कैराना में अपने सिद्वि प्राप्त पिता से उनके सेवक दैत्यों से बाग,कुएं और तालाब बनवाये। तालाब के बारे में कहा जाता है कि यह दैत्यों द्वारा एक ही रात्राी में निर्मित है। एक ओर की दीवार शेष रहने सम्बंध में कहा जाता है कि किसी वृद्व महिला के हाथ की आटा चक्की चलने की आवाज आने से कार्य अधूरा छोडकर चले गये कि भोर हो चुकी है। यह कथन मेरे अब्बाजी हाजी शमसुल इस्लाम

मज़ाहिरी ने अपनी जीवनी में विस्तार से लिखी है।

इस बारे में ऐतिहासिक पुस्तक 'तुज़्क–ए–जहॉगीरी' जो कि स्वयं सम्राट जहाँगीर की लिखी हुई है में लिखा है–– '' शेख बहा का पुत्रा शेख हसन जो बाल्यावस्था से मेरी सेवा कर रहा है की सेवा से प्रसन्न होकर मैं ने 'मुकर्रब खाँ' की उपाधि दी''––

सच भी यही है कैराना की जागीर उस परिवार को मिली थी जो पुश्तों से सम्राट की सेवा में था अर्थात यह जागीर नवाब के पिता को सम्राट अकबर ने दी थी, उपाधि 'मुकर्रब खाँ' जहाँगीर ने जिस को कैराना वासियों ने बिगाड कर मुकर्रब अली खाँ कर दिया है।

कैराना तालाब में स्वच्छ जल यमुना नदी से एक ओर से आता व दूसरी ओर से जाता था इस बाग के चारों और बाग था जिसकी सैर के पश्चात प्रशंसा में जहॉगीर ने अपने रोजनामचे ''तज़क–ए–जहाँगीरी' में यूँ लिखा है कि––''मेवादार वृक्ष जो कि विलायत में होते हैं यहाँ तक की पिस्ता के पौधे भी मौजूद थे''

जहाँगीर अपनी कैराना यात्रा बारे में विस्तार से लिखते हैंः

21 तारीख को कैराना आने की सआादतमन्दी का इत्तफाक़ हुआ। परगना मुकर्रब खाँ का है। इस की आब और हवा मौतदिल और कैराना की ज़मीन अहलियत रखने वाली है। मुकर्रब खाँ ने वहाँ बागात और इमारात बनाये हैं जब दो बार तारीफ बाग की गयी तो दिल को इस बाग की सैर करने की रगबत पैदा हुई, हफ्ते के रोज जब तारीख 22 हो गई मैं घर वालों के साथ इस बाग की सैर से खुश हो गया हूँ। यह बाग तकल्लुफात से खाली और बुलन्द मर्तबा व दिलनशीं है पक्की दीवार इसकी घेर में खींच दी गई और कियारियाँ को निकाला गया है। एक सौ चालीस बिगह ज़मीन है और बीच बाग एक हौज़ है लम्बाई दो सौ बीस गज़ है। दरमियान हौज़ के 'सुफ्फा–ए–माहताबी' चॉदनी रात में घूमने फिरने के लिए चबूतरा है जोकि बाईस गज़ मुरब्बा है। और बाग में ऐसे फल लगे पेड भी हैं जो कि गर्मी में या सर्दी में मिलते हैं, बाग में मौजूद हैं। मेवादार दरख्त जो कि ईरान और ईराक में होते हैं यहाँ तक कि पिस्ता के पौधे भी सरसब्जी की शक्ल में और खुश कद और खुश बदन सरू ;ब्लचतमेद्ध के पेड इस किस्म के देखे कि अब तक कहीं भी ऐसे खूबी और लताफत वाले सरू नहीं देखे गये। मैंने हुकम दिया कि सरू के पेडों की गिनती की जाए। तीन सौ पेड थे। और हौज के आस पास मुनासिब इमारतों का पता भी चल रहा है। ;अनुवाद : मास्टर शमसुल इस्लाम बाग़बॉ साहबद्ध

नवाब तालाब, नवाब गेट आदि के सुन्दर चित्रा व अधिक जानकारी कैराना की वेबसाइटों ूण्नतकनेजंदण्दमजधंपतंदं – ूण्पतंदंण्दमज पर देख सकते हैं।

मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी (रह.)

तुझ प अरबी अदब को बडा नाज़ था, जिससे लाखों में तू ही सरअफराज़ था
तुझको फैजाने हक से कलम वह मिला, जो अरब से भी ऑखे मिलाता रहा।

(जुबैर आज़मी)

आप 17 फरवरी 1930 ई. में कस्बा कैराना में पैदा हुये। आपके वालिद मौलाना मसीहुज़्ज़मां कैरानवी साहब दारूल उलूम देवबन्द से फाज़िल और उस समय के बडे किसान एवं वकील थे। आज़ादी के समय में इनको मजिस्ट्रेट बनाया गया। मसीहुज़्ज़मां साहब कैराना की जामा मस्जिद के ज़िम्मेदार भी थे। मौलाना अहमदुल्लाह साहब के साथ आप बर्तानिया का तख्ता उलटने की कोशिश के जुर्म में एक माह जेल में रहे। आप देवबन्दी उलमाओं के साथ आज़ादी की लडाईयों में शामिल थे। जामा मस्जिद में मौलाना वहीदुज़्ज़मां साहब के पहले अरबी उस्ताद मौलाना मौहम्मद खालिद थे जो मौलाना अहमदुल्लाह साहब के लडके थे। वह इस सेवा के लिये कुछ नहीं लेते थे, जबकि उनकी बच्चों पर मेहनत के बारे में मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी साहब खुद लिखते हैं कि मौलवी खालिद साहब एक बडे किसाान के बेटे थे इस लिये कभी–कभी एक हफ्ते तक रात में खेत पर पानी देने जाना होता, तब वह किताबे साथ ले जाते रात भर अवलोकन करते फिर सुबह बच्चों को पढाते फिर कुछ आराम करते। झिंझाना, दिल्ली और हैदराबाद के बाद आप इस्लामिक उच्च शिक्षा के लिए देवबन्द चले गए। मौलाना काज़ी मुजाहिद उल इस्लाम लिखते हैं 1369–70 हिजरी में आपके परीक्षा के परिणाम देखकर सबने वाह वाह और शाबाश कहा। शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप यहीं दारूल उलूम में शिक्षक हो गए। यह वह समय था जब देवबन्द से लखनऊ के विद्यार्थी छुटिटयों में अपने घर जाते तो रास्ते में दारूल उलूम नदवाह–लखनऊ के विद्यार्थी उनपर अपनी अरबी भाषा ज्ञान की धाक जमाते, आपके शिक्षक बनने के बाद दारूल उलूम के विद्यार्थी नदवाह वालों को ढूॅडकर अपना सिक्का जमाने लगे।

आपने 28 साल दारूल उलूम की खिदमत की, बहुत से नुमायॉ काम अन्जाम दिये, उर्दू और अरबी में कई किताबें लिखी, जिनमें अरबी लुगत (शब्दकोष, डिकशनरी) अल्कामूसुल्जदीद को बेइन्तिहा मकबूलियत

हासिल हुई। कई किताबें मदरसों के निसाब में शामिल हैं। विश्व में सैंकडो आपके शिष्य फैले हुए हैं। दारूल उलूम की कई इमारतें आपकी ज़ेरे निगरानी ता'मीर हुईं। 1985 ई. में आप मुआविन मोहतमिम (सह संचालक, सह व्यवस्थापक) बनाये गये।

1990 ई. में मौलाना असद मदनी द्वारा आपको ज़बरदस्ती हटा दिया गया,। इस बारे में आपके शिष्य लिखते हैं कि उन्होंने मौलाना वहीदुज़्ज़मां की कामयाबियों से खतरा महसूस किया। इस बारे में तफसील ''तर्जुमान दारूल उलूम'' मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी विशेषांक में है।

तुझको भूला ना दारूल ऊलूम आज तक, जिसमें तू नहरे हिकमत बहाता रहा।
(जुबैर आज़मी)

एक मुलाक़ात में मौलाना वहीदुद्दीन एडिटर ''अल रिसाला'' ने मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी साहब की बातों–बातों में अरबी भाषा की परीक्षा ली, परिणामस्वरूप आपके अरबी भाषा ज्ञान की तारीफ कि थी।

आप मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी साहब के मदरसा सौलतिया मक्का भी गये थे। सउदी अरब, कुवैत, मिस्र, इंग्लैण्ड, मारिशस, फ्रांस आदि अनेक देशो की आपने यात्रायें कीं थी।

अंतिम समय में मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी साहब ने अपने ऊपर जादू–टोना का असर महसूस किया। यहॉ तक कि जिस आमिल से कुछ लाभ हुआ, उसकी भी मौत हो गयी। आपकी 15 अप्रैल 1995 में दिल्ली में मृत्यु हो गयी, देवबंद में दफनाया गया। आपके तीन लडके और एक लडकी एवं कई भाई भतीजे सभी आला तालीम के बाद समाज में नुमायॉ खिदमत अन्जाम दे रहे हैं। छोटे भाई मौलाना अमीदुज्ज़मां कैरानवी जो ज़ाकिर नगर,,दिल्ली में रहते हैं हिन्दुस्तान की अहम शख्सियत हैं।

मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी साहब की किताबें, दारूल उलूम में उनकी जेरे निगरानी तामीर होने वाली इमारतें और अधिक जानकारी कैराना की वेबसाइट ूणंपतंदंण्दमज पर देख सकते हैं। उर्दू जानने वाले ''तर्जुमान दारूल ऊलूम'' का मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी नम्बर पढें जो 580 पृष्ठ का यह विशेषांक तन्ज़ीम अब्नाये कदीम, दारूल उलूम देवबंद ने छापा है, 161ध्11, जाकिर नगर, नई दिल्ली.25 से 100 रूपये में प्राप्त हो सकता है, फोन न. 011–26987535 से मालूम कर सकते हैं कि आपके आसपास यह विशेषांक कहॉ मिल सकता है। इन्शाअल्लाह कैराना वेबसाइट में भरपूर जानकारी दी जायेगी।

मेहरबान अली कैरानवी
5 फरवरी 2005,
दैनिक ''मुज़फ़्फ़र नगर बुलैटिन'

कैराना के गौरवशाली इतिहास पर वेबसाइट बनी
www.urdustan.net/kairana

अधिकत्तर कैरानावासी अपने गौरवशाली इतिहास से अपरिचित हैं ऐसे बहुत कम होंगे जो जानते होंगे कि कैराना में पिस्ता व सरू ;ब्लचतमेद्धआदि के पेड देखकर सम्राट जहॉगीर चकित हो गये थे और किस कैरानवी की स्मृति में भारत सरकार ने आल इंडिया रेडियो के कार्यालय में प्रतिमा स्थापित की हुई है व प्रसिद्व आडियो कैसिट कम्पनी एच. एम. वी. कि कैसिटों पर जो कुत्ते का चिन्ह अंकित है वह भी कैराना का ही था।

ऐसे सैंकडों प्रश्नों के उत्तर जानने को नये युग के साधन इन्टरनेट ने बहुत ही सरल बना दिया है। कैराना के एक दो मित्रों ने इसी साधन के अनुभव से अपने शहर के इतिहास को सार्वजनिक रूप दिया अर्थात कैराना की वेबसाइट बनाई हे जिसका नाम हैः ूण्नतकनेजंदण्दमजधंपतंदं अब ूणंपतंदंण्दमज

इस वेबसाइट में कैराना की ऐतिहासिक व सुन्दर स्मृतियों व स्थलों के बहुत से चित्रा हैं ऐसे चित्रा भी हैं जिन्हें देखकर कैरानावासी भी आश्चर्यचकित हो जाते हैं। साथ ही नये युग के नव निर्मित स्मृतियॉ छ सिनेमा, यमुना पुल व नई पानी की टंकी जिसका क्षमता में उतर प्रदेश में दूसरा स्थान है के भी चित्रा उपलब्ध हैं।

वेबसाइट पर हिन्दी, उर्दू, इंग्लिश तीनों भाषाओं में जानकारी दी गयी है। साइट का सब से महत्वपूर्ण लेख ''कैराना जा कभी कर्ण की राजधानी थी'' है जो कि प्रसिद्व पत्राकार मामचंद चौहान का सराहनीय लेख है। उर्दू में दो लेख वेबमास्टर उमर कैरानवी के हैं जो कि पत्रिकाओं में छप चुके हैं एक कैराना की कथाओं पर व दूसरा मौलाना रहमतुल्लह कैरानवी पर जिनकी पुस्तक पर विश्व विख्यात समाचार पत्रा 'लन्दन टाइम्स' ने लिखा था कि अगर मौलाना की पुस्तक पढी जाती रही तो ईसाईयत खत्म हो जायेगी। इंगलिश में जो जानकारी दी गयी है व दूसरी वेबसाइटों से ली गयी है जिसमें जमील नक़्श कैरानवी के बारे में जो कि पाकिस्तान के मकबूल फिदा हुसैन हैं व जिनके नाम पर पाकिस्तान में म्यूजियम भी है व साथ ही शबाब कैरानवी जो कि पाकिस्तान में सुपरहिट फिल्मों के डायरेक्टर थे के बारे में भी जानकारी दी गयी है।

कुछ समय पूर्व साइट मे एक वेब पेज समीक्षा (compliment) का जोडा गया जिसमें कैराना प्रेमियों की समीक्षा दी जायेगी जिसमें उनका पता, फोन नम्बर, ईमेल आदि भी होंगे जिससे आपस में सम्पर्क कर सकें।

कैराना वेब मित्रों का संकल्प साइट को और उपयोगी बनाने का है जिसके लिये बहुत सी जानकारियॉ जमा की जा रही हैं।

पर्यटन विभाग के कैराना को सौन्दर्यकरण की योजनाओं में लेने से वेब मित्रा कैरानावासी बहुत प्रसन्न हैं।

कैराना वेबसाइट की समीक्षा के कुछ ई.मेल ज्यूॅ के त्यूॅ:

Rajendra Kumar (UK)--Sr. Medical Physicist

Dear Umar, First of all I must congraulate you on the excellent work you have done on creating the website on Kairana. I belong to Village Simbhalka, near Shamli and presently live in UK. Often I raised the issue of missing history of our towns and villages which are so rich. With time we seems to have lost a lot of our history.. Next logical step would be that we make some strong organisation to preserve our reginal history. Through this organisation we raise money and also approach government to preserve some of these very important historical sites. I will be very happy to be part of any such organisation.

Preeti Jain. (USA)

(Governor Aiward holder)

Umar saheb You do really good.,i open the site daily, this is so nice,today i read all the compliments,they r remarkable. although u r doing best yurself,but as you want some more suggessions,so i will say,that first off all you should change its home page.at the homepage there should be only links .and one or two photos only.beside this add the pages for kairana collages and cinema also.thats it.

Preeti Jain. (USA.), (Governor Aiward holder, more detail kairana.net) -----email: jain_preeti_net@yahoo.com

---

Prashant Sangal (banglore)

bravo umar sab, achchha kaam kiya hai apne.. infact kisi ne to kairana k liye kuchh achcha kiya hai.. i m with u in this effort.. but there is a problem.. main yeh to nahi kehta ki galat hai .. par yeh naam urdustan shayad controversy na create kar de.... sivaye iske... sabhi kuchh great hai.. aur apke efforts to ultimate hain hi.. by the way mujhe nahi pata ki aap ko mera naam address aur Email ID kahan se mila.. but its ok as u used it to inform me about the website.. again i apreciate u 4 this good work .. with regards prashant . prashantsangal@yahoo.co.in

डा. तनवीर अहमद अल्वी

नौ गजा , नवाब दरवाज़ा एवं पत्थर में बदला चोर

अहम यादगार बाला पीर जिसको लोग अब आमतोर से पीर बाला या नौ गज़ा पीर कह कर याद करते हैं। यह कैराना के कदीम मज़ारात में से है। ऐसे मुतादिद मज़ारात इस हल्के में हैं जो कैराना के आसपास कुछ दूसरे कस्बात पर मुश्तमिल है जिसमें नोगज़ा पीर कहलाने वाले कदीम बुजुर्ग दफन हैं। बाला मा'सूम बच्चे को कहते हैं। इसलिए बाले मियॉ के नाम से कई मकामात पर मज़ारात मौजूद है और इससे मुराद यह है कि साहिबे मज़ार ने बहुत थोडी उमर में जिहाद में शिरकत की और एक नुमायॉ बल्के इमतियाज़ी किरदार अदा किया। ऐसे मज़ारात को नौ गज़ा भी कहते हैं। यह नौगज़ के नहीं हैं मगर एक ज़माने में यह दस्तूर था कि मरने वाले शहीद के झण्डे को उन्हीं के साथ दफन किया जाता था इसी वजह से निशाने कब्र लम्बा होता है।

कैराना के तारीखी मकामात में एक और अहम यादगार नवाब दरवाज़ा है। कभी इस के करीब 1935–40 के दरमियान एक बहुत मोटी कंकरीट की तेह भी नज़र आती थी। इसके एक तरफ शाहजी की मस्जिद है। नवाब दरवाज़ा अब टूट फूट गया लेकिन इसकkStructure बाकी है। इसमें एक तरफ कोई साहब रहने भी लगे हैं। नीचे की हिस्से में भडभूजे ने अपने बान बॉटने का सामान रख छोडा है। इस तरह से इसे भी कारोबारी युनिट में बदल दिया गया और किसी ने इसकी हिफाज़त नहीं की कार्पोरेशन को भी खयाल नहीं आया कि इतनी बडी यादगार कितनी बुरी हालत में है।

इसके करीब में आगे बढकर वह जगह है जहॉ हूर का ताज़िया रखा जाता है और उसके करीब एक ऐसा पक्की ईंट का अहाता जिसके अन्दर किसी बुजुर्ग की कब्र है। उससे मिला हुआ एक आडा भूरे रंग का पत्थर खडा है और इसके लिए कहा जाता है कि यह चोर है और इन बुजुर्ग की बददुआ से पत्थर में बदल गया है जबकि यह एक फर्ज़ी बात है और यह टुकडा दरअसल किसी कदीम इमारत का हिस्सा है। जो इस पत्थर से ता'मीर की गई, इस पत्थर का एक और बडा सा टुकडा छोटे इमाम बाडे के दरवाजे के सामने ज़मीन में गडा हुआ है। इनके दरमियान कभी एक बडा महल था जो अपनी ऊॅची ऊॅची दीवारों की वजह से एक खास इमतियाज रखता था। इसका बडा सा फाटक अपनी मेहराब के साथ 1940–50 तक मौजूद था मगर महल के अन्दरूनी आसार शिकस्त व रेख्त का बुरी तरह शिकार थे। इनकी देखभाल का भी कोई इन्तज़ाम नहीं था। यह भी नवाब के अपने महलात में से एक महल था। एक और महल पत्थरों की मस्जिद से इधर हूर के ताजिये के चबूतरे से क़रीब वाके था। इसका दरवाज़ा जो दूसरे दरवाजों के मुकाबले में चौडा था 1935 तक बाकी था और बाकी इमारात की जगह इन छोटे मोटे मकानों ने ले ली थी जिस में चिडीमार रहते थे। यह दरअसल नवाब के अपने खानदान की रिहाईशगाहें थीं।

उमर कैरानवी

संगीत की दुनिया में ''कैराना घराना''

'कैराना घराना' जिसने संगीत की दुनिया विशेष रूप से शास्त्रीय संगीत में कैराना का नाम रौशन किया, वह ''किराना घराना'' के नाम से अधिक मशहूर है। जिसका आज भी संगीत में योगदान है। युरोप, अमेरिका, चीन आदि की यात्राा करने वाले कैराना घराना के संस्थापक अब्दुल करीम खाँ राग गाने में विश्व विख्यात रहे हैं, उनके गीतों के एच. एम. वी. ने अनेक ग्रामोफोन रिकार्ड बनवाये जोकि बहुत हिट हुए।

एक समय ऐसा था कि भारत में दो संगीतकार थे जिनमें से एक अब्दुल करीम खॉ थे और रिकार्डर कम्पनी अकेली एच. एम. वी. थी, कम्पनी के ग्रामोफोन रिकार्डर पर अंकित कुत्ते के चिन्ह के बारे में कहा जाता है कि अब्दुल करीम खाँ जब बम्बई गये तो अपने साथ वह अपना कुत्ता भी ले गये जो संगीत ध्यान से सुनता था यही बात एच. एम. वी. को पसन्द आयी और इस कुत्ते के चित्रा को रिकार्डर लोगो के रूप में दे दिया गया। बहुत से ग्रामोफोन रिकार्डरों को आज भी कैरानावासी काज़ी अनीस अहमद के पास देख सकते हैं। इस बारे में मुन्शी मुनक्क़ा जो फिल्मी दुनिया से ताल्लुक रखते थे और उन्होंने अब्दुल करीम खाँ का समय देखा है ने अपनी पुस्तक ''कडवे बादाम' में लिखा है कि एक बार अब्दुल करीम खाँ पूना में संगीत की शिक्षा दे रहे थे तब किसी विघार्थी से खिन्न होकर उन्होंने कहा कि तुम संगीत की शिक्षा नहीं पा सकते कुत्ता पा सकता है। तब उन्होंने इस बात को सच कर दिखाया दो कुत्तों को राग सिखाय जो प्रोग्राम पेश करते थे। एच.एम. वी. ने कुत्ते के चिन्ह उन्हीं के सम्मान में दिये हैं।

कैराना घराना के सम्मान का अनुमान एक कथन से यूँ होता है कि अपने समय के महान संगीतकार मन्नाडे का किसी कारण कैराना आना हुआ तो कैराना की सीमा प्रारम्भ होने से पहले ही जूते उतार कर हाथों में ले लिए कारण जानने पर बताया कि यह धरती महान संगीतकारों की है इस धरती पर में जूतों के साथ नहीं चल सकता। कैराना वासियों ने मन्नाडे को सम्मान का उत्तर सम्मान से देते हुऐ उनकी याद में छडियान मैदान के स्टेज को जिस पर उन्होंने अपना प्रोग्राम प्रस्तुत किया था, मन्नाडे स्टेज का नाम दे दिया जो

आज भी प्रचलित है।

अब्दुल करीम खाँ को आल इंडिया रेडियो ने इस तरह सम्मान दिया कि अपने मुख्य प्रवेश द्वार पर उनकी बहुत बडी प्रतिमा स्थापित की हुई है।

यहाँ कैराना घराना की संगीत साधना मुगल काल से हुई थी। उस समय कैराना के रहने वाले उस्ताद शकूर अली खां द्वारा यह संगीत कला शुरू की गई थी। किराना घराना आज भारत में ही नहीं बल्कि देश विदेश में भी प्रसिद्व है कुछ वर्ष पूर्व किराना घराने की यशस्वी कलाकार श्रीमति गंगुबाई हंगल को शास्त्रीय गायन, नव भारत टाइम्स ग्रुप द्वारा स्वर्गीय प्रधान मंत्राी इन्दिरा गांधी की पुण्य तिथि पर अपने उत्सव में आयोजित किया गया था। 20वीं सदी से पहले कैराना घराने का संगीत देश विदेश में प्रसिद्व रहा। यशवी कलाकार गंगूबाई हंगल जो कि हुब्ली–बंगाल में रहती हैं से आशिर्वाद लेना आज के संगीतकार अपना सौभाग्य समझते हैं। कैराना घराना के पंडित भीमसेन जोशी जो कि आजकल सुनामी पिडितों की सहायता में लगे हुए हैं की भी चारों ओ से सराहना हो रही है।

बाद में यह घराना कर्णाटक और बंगाल में बस गया। इस घराना में ठुमरी गायन का विशेष महत्व है। आज भी गायिका मुनीर खातून बेगम ठुमरी में अपने धराने की परंपरा के अनुरूप हर स्वर पर ठहराव से अपनी गायकी का लोहा मनवा रही है।

कैराना घराना के बारे में मेगजीनों, पुस्तकों और इन्टरनेट वेबसाइटों में बहुत जानकारी हैं एक वेबसाइट पर कैराना घराना के कुछ सदस्यों का ब्यौरा यूँ दिया गया है ;झंपतंदं ळीतंदरू।इकनस ॅीमक झींद ;1871.1949द्धय ।इकनस झंतपउ झींद ;1872.1937द्धय त्वींद ।तं ठमहनउय ठीपउेमद श्रवेीप ;इण 1922द्धय थ्मतव्र छप्रंउप ;1910.75द्धय भ्पतंइंप ठंतवकांत ;इण 1905द्धय ठींप रंस डवींउउंकए ळीनसंउ भ्नेमपद ॅींहहंदण्द्ध

ग्रामोफोन पर बना कुत्ता, अब्दुल करीम खाँ, मुनीर खातून बेगम के चित्रा व अधिक जानकारी के लिए कहीं भी कैराना वेबसाइट कैराना डोट नेट देखें।

....

क्या आप जानते हैं ? अभिनेता अमरीश पूरी का आखरी फिल्म कच्ची सडक में ''हसन कैरानवी'' नाम था।

Kachchi Sadak (2006) Amrish Puri Name: **Hasan Kairanvi**
more detail: www.imdb.com

उमर कैरानवी

नौ लखा बाग़ और बाग़बाँ

कस्बा कैराना की ईदगाह की कहानी बडों से सुनते रहे हैं कि कैसे एक रात में मजिस्ट्रेट को बाग़ तैयार दिखाया था। यह उस समय के बागबानी के कार्य करने वालों का कारनामा था। बागबानों के कैराना में आबाद होने के बारे में मेरे अब्बाजी हाजी शमसुल इस्लाम मज़ाहिरी सीना ब सीना कहानी (लोक कथा) सुनाते हैं जो उन्होंने अपनी जीवनी में विस्तार से लिखी है कि ''जब नवाब मुकर्रब खाँ वज़ीरे जहॉगीर बादशाह ने नौलखा बाग़ लगाने का संकल्प किया था तब उन्हीं दिनों एक राजस्थानी राजपूत फरार हत्यारा नवाब साहब की शरण में आया। बातचीत से पता चला कि वह बागबानी में माहिर था। नवाब साहब उन दिनों महल और तालाब के निर्माण के साथ नौलखा बाग़(नो लाख वृक्षों का उद्यान) का संकल्प (मन्सूबा) किये हुये थे। इस शर्त पर उसको क्षमादान करवायी कि वह उनके नौलखा बाग के संकल्प (मन्सूबे) को पूरा करवायेगा।'' इस बाग में बादशाह जहॉगीर आये और अपनी पुस्तक ''तुजके जहाँगीरी'' में इसके विवरण में लिखते हैं कि इस बाग में मैंने पिस्ता और सरू ;ब्लचतमेद्ध के ऐसे पेड देखे, इन जैसे कहीं नहीं होते। यह सब बाग़बानों का ही तो कमाल था। यह पुस्तक खुदा बख़्श लायब्रेरी–पटना की वेबसाइट पर उर्दू में उपलब्ध है।

तालाब के आसपास जो सैंकडों दूधी पत्थर के कुऍ हैं यह उसी बाग की जल व्यवस्था के लिये बनाये गये थे। ऐसे पत्थर के कुऍ हिन्दुस्तान में कही नहीं। उस्ताद महमूद खॉ सफ़ी कैरानवी, अपनी मन्ज़ूम उर्दू पुस्तक ''कैराना शरीफ़'' में जो वेबसाइट कैराना डाट नेट पर उपलब्ध है। यूॅ लिखते हैं

लगाया था नौलखा एक बाग़ भी
लगे आम व अमरूद सेब व बही।
दरख्त इसमें लाखों किस्म के लगे
सभी सब्ज़ व शादाब फूले फले।
कहे हिन्द में पिस्ता फलती नहीं
मगर बाग़े बंगला में फूली फली।

140बिगह का बाग़ जिसके बीच में तालाब था बहुत बडा होने के कारण इस बागबाँ ने अपने रिश्तेदारों को भी यहाँ बुला लिया। जो यहीं बस गये और आज भी खेत खलिहान एवं बागों के काम कर रहे हैं। आगे चलकर यह लोग माली कहलाये जिन्होंने वक़्त पडने पर तलवार भी उठाई। इस बारे में ''कैराना शरीफ़'' में शायरी में विवरण यूॅ हैं:

जो थे बाग़बानी को यहॉ बाग़बाँ
उन्हीं की है औलाद माली यहाँ
ग़दर में गुलामी से आ आ के तंग
लडे अहले कैराना की ख़ूब जंग

उ.प्र. में कैराना, लखनऊ, मंगलौर, सहारनपुर नजीबाबाद, बहराईच आदि में फैली हुई इस बिरादरी ने जो अलग–अलग नामों से जानी जाती थी, कुछ समय पूर्व बडों छोटों के मशवरे से इस बात की घोषणा कर दी कि हम माली, बाग़बाँ और गुलफरोश बिरादरी ने अपनी एक पहचान बाग़बाँ कर ली है, जिसे सभी ने अपना लिया है। बुजुर्गों का अनुमान है कि इस समय कैराना की आबादी में लगभग दस हज़ार बाग़बाँ हैं।

1910–50 ई. में नबिया पहलवान (बागबाँ) का नाम पश्चिमी उ.प्र. और हरियाणा में बहुत मशहूर हुआ। मौलवी फैज़ुल्लाह साहब के रूहानी असर से इस पहलवान ने बहुत नाम कमाया। मौलवी साहब भी नबिया पहलवान की कुश्ती देखने आते थे। बुजुर्गों का कहना है कि उस समय हज़रत थानवी के मुरीद जो कि कुश्ती देखने को अच्छा नहीं समझते थे वह भी चुपके–चुपके नबिया पहलवान की कुश्तियॉ देखने आते थे। छडियों के दंगल से पहले इस पहलवान को बिरादरी वाले एक रूपया हर घर से देते थे जबकि एक रूपये का एक सेर घी आता था।

उस समय नबिया पहलवान, भंगड–गूजर एवं इन्ना–तेली का डंका था। जब तक यह तिकडी रही कोई कैराना से जीत कर ना जासका। भंगड–गूजर बारे में कहा जाता है कि यह बगैर खूंटे से बंधी भेंस की एक हाथ की शक्ति से टांग जकडकर दूसरे से दूध पीता था।

इसी समय में हाफिज बुन्दू (बागबाँ) रूहानी विद्वान थे। इनका मज़ार मौहल्ला अफगानान–धौसा चौकी के पास है जहॉ अकीदतमंद (श्रद्धालु) काफी संख्या में हाज़री देते हैं। थोडी दूरी पर मुगल काल में बनी मस्जिद है जिसे अब हाफिज बून्दू वाली मस्जिद कहा जाता है। कैराना में आपके कई शिष्य रूहानी लाभ पहुॅचा रहे हैं।

कुछ समय पूर्व अनीस पहलवान (बागबाँ) मरहूम जो कैराना में बहुत से ईनाम जीत कर लाये को1995 ई. में तत्कालीन मुख्यमंत्राी श्री मुलायम सिंह यादव ने 25000 रूपये तथा प्रमाणपत्रा दिया था।

वर्तमान में अब्बाजी जिन्हें मदर्सा सौलतिया–मक्का में क़याम ;निवासद्ध के दौरान मक्का की एक बडी संस्था द्वारा बतौर अरबी–फारसी उस्ताद बनाने की पेशकश की गई, जो आपने नामन्ज़ूर की, क्योंकि मक्का में जो विवशता के कारण कुछ समय

के लिए दफ़न किया जाता है वह आपको पसन्द नहीं। भतीजा जिया उल इस्लाम जो कैराना में राष्ट्रपति एवार्ड लाया जिसके पिताजी दिल्ली में स्काउट एंड गाईड के स्टेट कमिशनर हैं एवं मुझ से बडे भाई नजमुल इस्लाम जो उप–प्रधान मंत्राी चौधरी देवी लाल के दो बार सहायक रह चुके हैं इसी बिरादरी से हैं जो कल कैराना को नौलखा बाग़ से सजाने के लिये यहाॅ बसे थे आज यह सेवक इन्टरनेटॢणंपतंदंण्दमजद्ध की दुनिया में इसे सजा रहा है।

17.01.2007

उमर कैरानवी

बेमिसाल ईदगाह

कस्बा कैराना के पश्चिम मे अनुमानतः 8180ई. में लगभ 20 बिगह में बनी ईदगाह जो सौभाग्य और सुव्यवस्था से सफेदी में अलग ही सौन्दर्य बिखेरती हुई आज भी सुशोभित है। इस्लामी स्थापत्यकला (फन्ने ता'मीर)की बहतरीन मिसाल है। सुन्दर एवं लुभावनी जिसे देखने वाला देखता रह जाता है। ऐसी सुन्दर ईदगाह किसी कस्बे, शहर तो क्या संसार में भी कहीं नहीं। उस्ताद महमूद खॉ स़फी कैरानवी, अपनी मन्ज़ूम उर्दू पुस्तक ''कैराना शरीफ़'' में जो वेबसाइट कैराना डाट नेट पर उपलब्ध है। ईदगाह की प्रशंसा यूॅ करते हैं

यहाँ ईदगाह भी है एक दिलरूबा
बडी दिलकुशा है बहुत खुशनुमा।
पडी जैसे सूरज की इस पर निगाह
तो आता है रोज़ाना वक़्ते पगाह(सुबह)।

ईदगाह जिसकी आज हरे नीम के पेडे शौभा बढा रहे हैं कभी इस स्थान पर एक रात में बाग तैयार दिखाया गया था। इस बारे में मुशर्रफ सिद्दीकी,एडिटर साप्ताहिक ''अमन के सिपाही'' 28 फरवरी 2005ई. के अंक में इस कहानी को कुछ इस तरह से लिखते हैं।

''कैराना की प्राचीन ईदगाह की तामीर से पूर्व इस भूमि पर खण्डरात थे और पुजाएं के नाम से जाने जाते थे। उक्त भूमि पर एक समाज के लोग अपना हक जताते थे, दूसरी और चौधरी इमदाद अली उक्त भूमि पर अपना हक जताते थे। दोंनों पक्षों का विवाद अदालत तक पहुॅचा। एक पक्ष के लोगों ने उक्त भूमि को बाग बताया। मजिस्ट्रेट ने कमीशन भेजा और खुद भी मुआयना किया। अगले रोज कमीशन पहूँचा तो वहाँ पर बाग मौजूद था।

बताते हैं कि उक्त भूमि पर रातों–रात सफाई कराकर आम के बडे टहने एव कुछ पेड लगाए गए थे। दूसरे पक्ष ने कहा कि यह कल रात ही लगाये गये हैं इन्हें हिलाकर देखिये मजिस्ट्रेट ने कहा हम यह देखने आये हैं कि इस भूमि पर क्या है यह नहीं कि कब से है। फिर चौधरी इमदाद साहब (दादा चौधरी अखतर हसन वर्तमान अध्यक्ष ईदगाह समिति) और दूसरे पक्ष के बीच समझौता हुआ कि इस भूमि पर आगे कोई अपील न की जाये और न ही आगे लड़ा जाये। इस जगह पर ईदगाह की तामीर करा दी जाये। जो सभी लोगों के काम आ सके और ऐसा ही किया गया।'' (ज्युॅ का त्यूॅ वेबसाइट पर उपलब्ध)

कैराना के आकर्षण का केन्द जो लगभग 20 बिगह में बनी इस बेमिसाल ईदगाह में इस समय अधिकतर नीम के पड लगे हैं।

ईदगाह की दो तरफ सडक और दो तरफ चौधरी अख़्तर साहब की कृषिभूमि है। यह चौधरी साहब की ज़मीन (भूमि) काफ़ी नीची है मेरा अनुमान है कि ईदगाह को प्रयाप्त ऊॅचाई देने और निर्माणकार्य में इस स्थान की मिटटी का प्रयोग हुआ होगा। क्यूॅकि पास ही दूसरी ज़मीनें सडक की

ऊँचाई के बराबर हैं। ईदगाह की चारों ओर छोटी बडी कई बहुत सी पेडियां हैं, सडक की ओर वाली पेडियां भराओ के कारण दबती जा रही हैं। सडक की तरफ की जालीदार दीवार जिसमें अक्सर लोग अपने जानवर बॉध देते थे टूट जाती थी कुछ समय पूर्व इसे चौडा करा दिया गया है। मेन गेट के पास चौडी मुंडेर वाला कुऑ था उसे 1995ई. में पाट दिया गया है। इसी के क़रीब एक हैंडपम्प काफ़ी दिन तक लगा रहा।

ईदगाह के दो हिस्से हैं जिन्हें कच्ची ईदगाह और पक्की ईदगाह कहा जाता है। कच्ची तिकोने आकार में हे कभी इसमें मिर्च मण्डी थी जो यहीं से हलवाईयों के कब्रिस्तान के सामने चली गई थी। सुलेमान बागबाँ साहब का कहना है कि नेकदिल मौलवी मौ. उमर साहब मरहूम को मण्डी का जाना पसंद नहीं आया था उनकी बददुआ से तभी से कैराना की मिर्च में उसकी विशेषता गायब होती चली गई।

कच्ची ईदगाह अब सडक से लगभग दो फुट की ऊँचाई पर है इसमें एक बडा बरामदा और एक कोठा जो कि शायद चौकीदार के लिये बना है जिसमें अधिकतर आटा चक्की चलती रही है। इसमें नीम के पेड लगे हैं अब कई पेड लगाये गये हैं। कच्ची ईदगाह मे 2003 ई. तक एक इमली का पेड था जिससे ईदगाह का आकर्षण दोगुना हो जाता था। कैराना की वर्तमान नस्ल जो ईद की नमाज़ के लिये आते रहे हैं एवं आसपास की आबादी वाले इस इमली के पेड को बहुत याद करते हैं।

पक्की ईदगाह जो कच्ची से लगभग 4 फुट ऊँची है लाल ईंटों की जोकि चौडी मुडेर में 6 पेडियों और छोटे–बडे बहुत से पुश्तों के साथ चकोर बनी है। चौबारे के नीचे ईंटों के फर्श पर लिखी तिथि से पता चलता है कि यह 1961 में पक्की ईंटों का फर्श किया गया। सुलेमान साहब का कहना है कि ईदगाह का फर्श मौलवी मौ. उमर साहब की महनत से इकटठा किये गये पैसों से हुआ था और ईदगाह पानीपत के कारीगरों ने बनाई थी। इसमें दो छोटे बरामदे और एक चौबारा बना है जो कि ईदगाह का सबसे सुन्दर हिस्सा है, इस चौबारे में मुगलकालीन इमारतों में प्रयोग होने वाला रंग रोगन कहीं–कहीं से अभी भी दिखाई देता है। इसमें कलात्मक फूल–पत्तियों, चार छोटे मीनारों, जीलियों और छजली से मोहित कर देने वाली सुन्दरता है। बुजुर्ग बताते हैं कि कभी इस की दो मंज़िला छत पर से यमुना दिखाई देती थी। पक्की ईदगाह में नीम के पेड लगे हैं 7–8 वर्ष पहले तक शीशम के पेड भी थे। जैसे ताजमहल को हुमायुं के मकबरे के आधार पर डिजाईन किया गया था उसी तरह ऐसा प्रतीत होता है कि कैराना की ईदगाह का डिजाईन मुगलकालीन इमारत ''चांदनी हज़ीरा'' जो बूचडखाना वाले रोड पर बनी है से लिया गया है। क्यूँकि ईदगाह की पुश्त की दीवार और प्लेटफार्म(चबूतरा) जोकि ईदगाह का मुख्य ढांचा है वह चांदनी हज़ीरा से मिलता जुलता है इसी लिये ''चांदनी हज़ीरा''को पुरानी ईदगाह भी कहा जाता है। जबकि डा. तनवीर अहमद अल्वी कहते हैं कि यह कब्रिस्तान में बनी इमारत जनाज़ा की नमाज़ पढने के लिये थी।

1978 ई. में यमुना में ऐसी बाढ़ आई थी कि पानी लगभग 4 कि.मी. बहकर कैराना आ गया था। पानी को आगे बढने से रोकने के लिये ईदगाह के बराबर वाली सडक पर कडा(आड–अवरोध) लगाया गया थी।

भोले–भाले लोग कहते थे कि यमुना ईदगाह को सलाम करने आई है।

ईदगाह के दो ऊँचे मीनार हैं जिसमें खेतों की तरफ बायी ओर का मीनार गिर गया था इस पर लगे शिलालेख से पता चलता है कि इसे नवम्बर 1967ई. में ता'मीर किया गया है।

दूसरा दायी ओर सडक की तरफ का मीनार बगैर रंग रोगन के बहुत समय तक भय के कारण काला रहा क्यूंकि मशहूर था कि इस पर असर अर्थात जादू टोना है। लेकिन 2001ई. में आसपास की आबादी के नवयुवकों ने पचासो साल से काले मीनार को रंग कर अपनी हिम्मत और ईदगाह से अपने लगाओ का परिचय दिया था। वहीं यह भी प्रशंसनीय है कि इन लोगों ने स्वयं ही आसपास की आबादी से इसके खर्च में सहयोग लिया था। और इतनी ऊँचाई पर रंग करना अलग बडी बात थी। मुझे उनमें से अब जहूर हसन ,फ़ुर्क़ान नीलगर, तौफ़ीक बाग़बाँ, मतलूब पुत्र साम्मा और दिलशाद याद हैं। आसपास की आबादी के इसी लगाओ के कारण भी ईदगाह 127 सालों से बग़ैर चौकीदार के सलामत रह सकी।

धार्मिक पुस्तकों से पता चलता है कि ईदगाह आबादी से दूर बनाई जाती है। जिस कारण यह एक बडा प्लेटफार्म (चबूतरा) मीनारों के साथ होता है। यही तरीक़ा मुजफ्फर नगर, कांधला और दिल्ली तो क्या संसार भर में ईदगाह में प्रयोग किया गया है। सभी प्रमुख स्थानों की ईदगाह इन्टरनेट पर देखी जा सकती हैं। उनको देखने से ज्ञात होता है कि ईदगाह का ढांचा का जो स्वरूप है उसे कैराना की ईदगाह में बहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया गया है। क्यूंकि यह आबादी से दूर होती है इसलिये इसे बिल्डिंग नहीं बनाया जाता और मस्जिद भी नहीं कि नमाज़ियों के लिये जगह बनाई जाये। वैसे भी कैराना की दूसरी ईदगाहों में भी नमाज़ पढ़ाई जाती है भविष्य में ज़रूरत पडने पर उन सैंकडों मस्जिदों में से कुछ में ईद की नमाज़ प्रारम्भ की जा सकती है या फिर जैसाकि धार्मिक पुस्तकों से ज्ञात होता है अर्थात आबादी से दूर बनाई जा सकती है।

अफसोस कि कैराना के इतिहास पर प्रकाश डालने वाली पुस्तकों में इसके बारे ना लिखने के बराबर लिखा है।

ईदगाह में 7–8 वर्ष पूर्व जो शिलालेख (कत्बा) लगाया गया है इस बारे में सुना है कि यह जामा मस्जिद में रखा था जो कभी इसी स्थान पर लगा था। इस पर फारसी की आठ में से एक इबारत قبول باد بِنائش ز چودھری اِمداد से पता चलता है कि ईदगाह को चौधरी इमदाद साहब (दादा चौधरी अखतर हसन साहब, वर्तमान अध्यक्ष ईदगाह समिति) ने बनाया था। शिलालेख (कत्बा) बहुत ऊँचे स्थान पर लगा है जिसे पढने में कठिनाई होती है। शिलालेख उर्दू अनुवाद के साथ कम ऊँचाई पर होता तो ईदगाह का इतिहास जनता को समझने में आसानी होती।

सौभाग्य से अभी तक कैराना की ईदगाह का व्यवसायीकरण नहीं किया गया। आज यह कैराना की एकमात्र ठीक–ठाक हालत वाली बेमिसाल ऐतिहासिक धरौहर है जहाँ असीम शांति का अनुभव होता है। ख़ुदा से दुआ है कि इस सुन्दर ऐतिहासिक ईदगाह को हमारी आने वाली नस्लें भी देख कर फखर कर सकें। आमीन!

15 जनवरी 2007

स्व. मौ. सलीम
साप्ताहिक 'राज गरिमा'
14 मई 2001

देवी मन्दिर (पर्यटन स्थल)

मराठा कालीन बाला सुन्दरी मन्दिर कर्ण नगरी "कैराना" का गौरव

कैराना, (राग) पानीपत–खटीमा मार्ग पर कस्बा कैराना जिला मुजफ्फर नगर (उ.प्र.) में पश्चिम की ओर एक विशाल देवी मन्दिर जो बाला सुन्दरी मन्दिर के नाम से जाना जाता है स्थित है। उक्त विशाल मन्दिर का निर्माण लगभग 400 वर्ष पूर्व हुआ था यह मान्यता है। उक्त मन्दिर से मिली हुई मन्दिरों की एक बहुत बडी श्रंखला स्थापित है। प्रत्येक मन्दिर का अपना एक पौराणिक इतिहास है जिसका विवरण निम्न प्रकार किया गया। इन मन्दिरों के बीच एक विशालकाय तालाब स्थित है जो प्राचीनकाल से ही दो तरफ सीढ़ियों दार घाट के रूप से बना है। यह भी माना जाता है कि कस्बा कैराना जिसका नाम महाभारत के महानायक महाराजा कर्ण के नाम पर रखा गया था अपने प्राचीनतम इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। प्राचीन समय में उक्त मन्दिर परिसर में लगभग 300 बिगह जमीन थी जिसमें इस समय कुछ जमीन दूसरे लोंगों ने अपने कब्जे में ले ली तथा कुछ जमीन पर शिक्षण संस्थाऐं, चिकित्सा संस्थाऐं व **मन्दिरों की उक्त श्रंखला** स्थापित है।

मन्दिर श्री बालासुंदरी देवी जी परिसरः इस मन्दिर का निर्माण किसने कराया था केवल इतना ही जाना जाता है कि यह मन्दिर मराठाकाल में निर्मित है। इसी एकलिंगनाथ मन्दिर के पास श्री बाला सुंदरी देवी का एक विशाल मन्दिर है जो भारतीय सभ्यता व भवन निर्माण कला का अद्‌भुत व चमत्कारी प्रमाण है क्योंकि उक्त मन्दिर के गुम्बद में पाँच मन्जिलें निर्मित हैं जिन पर सिढ़ियों द्वारा ऊपर जाने का रास्ता है जो आज भी चालू अवस्था में है और सीढियों द्वारा आज भी मन्दिर के गुम्बद में चोटी पर आराम से पहुँचा जा सकता है और चोटी से आज भी यमुना माता के दर्शन होते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मन्दिर अद्‌भुत भवन निर्माण कला की मिसाल है। क्योंकि इस तरह का मन्दिर ना तो चारों धामों में कहीं पर देखने का मिलता है। इसके अलावा इस मन्दिर परिसर में हनुमान जी का मन्दिर स्थित है व

यात्रियों के लिए आराम करने हेतु आरामदायक कक्ष बने हैं तथा मन्दिर के सामने विशालकाय तालाब स्थित है जिसका विवरण बाद में दिया गया है।

देवी मन्दिर परिसर में अन्य मन्दिर श्री हनुमान जी व मन्दिर श्री भैरव बाबाजी का है जो लगभ्ग 300–400 वर्ष पुराना है जिसकी यह मान्यता है कि श्री देवी बालासुन्दरी जी के दर्शन करने के पश्चात श्री भैरव बाबा व हनुमानजी के दर्शन किये जाते है। इसी परिसर में एक शिव मन्दिर भी स्थित है। जो लगभग 100 वर्ष पूर्व निर्मित है।

लगभग 200 वर्ष पूर्व निर्मित इस परिसर में श्री बाला जी महाराज व शिव परिवार व संतोषी माताजी का मन्दिर है जिनके बारे में क्षेत्रीय जनता में अटूट श्रद्धा है।

मन्दिर परिसर बाबा वण्खण्डी महादेव जीः इस परिसर में प्राचीनतम शिव मन्दिर व हनुमानजी के मन्दिर व स्वयं प्रकट शिवलिंग है जो बाबत बनखण्डी महादेव जी मनोकामना सिद्ध करते हैं। प्रत्येक वर्ष दूर दराज इलाकों से श्रद्धालू लोग यहॉ आकर कावड द्वारा बाबा वनखण्डी महादेव जी की पूजाअर्चना करते हैं इसी परिसर में नवनिर्मित सत्संग भवन है व बाहर से आने वाले यात्रियों के लिए ठहरने की व्यवस्था है। इस मन्दिर का प्रबन्ध शिव सेना सनातन मंडल कैराना करता है। उक्त मन्दिर जी के निर्माण के विषय में यह मत प्रचलित है कि प्राचीन समय में बाबा शिवगिरी नामक महाराज के गुरू रहा करते थे और उन्हें शंकर भगवान ने स्वप्न में दर्शन देकर बताया कि मैं स्वयं प्रकट होने जा रहा हूँ और तभी से यहाँ स्वयं प्रकट शिवलिंग है जिसका नाम बाबा वनखण्डी महादेव जी माना जाता है तथा इसी से मिला हुआ माता मंगला जी का मन्दिर है जिसमें पूरे शहर के देवस्थान हैं।

विवरण देवी मन्दिर तालाबः इन सभी मन्दिरों के बीच विशाल देवी मन्दिर तालाब है जो लगभग 24 बिगह भूमि में स्थित है तथा जानिब पश्चिम व जानिब उत्तर दिशा में प्राचीनकाल से ही सिढ़ियोंदार पक्का घाट जनाना व मर्दाना बने हैं जो आज भी जीर्ण अवस्था में स्थित है तथा पूर्व और दक्षिण की ओर पक्की पटरी बनी है उक्त तालाब को भरने के लिए एक कूल–छोटी नहर राजबाहा कैराना से तालाब तक आई हुई है परन्तु कुछ स्वार्थी तत्वों ने उक्त कूल को तोडकर अपने खेतों में मिला लिया है जिस कारण उक्त तालाब से आबपाशी खत्म हो गयी है और तालाब सूख गया। टयूबवैल लगाकर तालाब को भरने का प्रयास किया

परन्तु प्रयास सफल नहीं हुआ। तालाब आज भी पूरी तरह से सूखा पडा है जिससे क्षेत्र की जनता की धार्मिक भावनाओं को आघात पहुँचता है क्योंकि प्रत्येक वर्ष दीपावली व होली के दिन तालाब उक्त में प्राचीन समय से दीप पूजन किया जाता है। तालाब को भरने का प्रयोग पूर्व में सरकारी स्तर पर किया जा चुका है परन्तु यह प्रयास भी सफल नहीं हुआ।

दक्षिण में विश्व गुरू मुनिशानन्द जी महाराज महामण्डेलश्वर जी की प्रेरणा व अनुकंपा से विशाल सत्संग भवन निर्मित है। इस मन्दिर में प्रत्येक वर्ष सावन महीने में शिवरात्री के दिन विशाल मेले का अयोजन किया जाता है तथा श्रद्धालु हरिद्वार से कावड लाकर जल चढ़ाते हैं इसी से मिला देवी मन्दिर यानी माता मंगला वाली का मन्दिर व देवस्थान व आराजी भूमिघरी देवी मन्दिर है।

इस प्रकार सारांश के रूप में यह कहा जा सकता है कि उक्त देवी मन्दिर का विशाल परिसर जिसमें उक्त सभी मन्दिर स्थित हैं एक विशाल परिसर है और सम्पूर्ण भारत वर्ष में अपनी तरह का एक मात्र परिसर है जिसकी पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किये जाने की जरूरत है। क्योंकि यह पानीपत–खटीमा मार्ग से जुडा होने के कारण व कैराना जैसे एतिहासिक नगर में होने के कारण जो हरियाणा की सीमा से मिला हुआ है एक अच्छा पर्यटन स्थल बन सकता है।

0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र

<u>साद अख़्तर सिद्दीकी</u>

अनीस पहलवान यू.पी. केसरी

यू.पी. केसरी जनाब अनीस अहमद 20वीं सदी के मध्य में कैराना के खैल कलां में जनाब हाजी मौहम्मद सफी अहमद माली (बागबाँ) के यहाँ पैदा हुए। अपनी दीनी तालीम के साथ–साथ उनको बचपन से ही पहलवानी का शौ़क लग गया था। इन्होने अपने जीवन की पहली कुश्ती 10 साल की उम्र में लडी इसके बाद दिन रात इसमें तरक्की करते रहे, अनीस साहब को देश में कई जगह जाने का मौका मिला। वे हरियाणा, यू.पी., दिल्ली, पंजाब के लिए लडे। उन्होने अपने जीवन में हजारों कुश्तियाँ लडी और इनाम जीते। सन 1980 से 1985 तक यू.पी. केसरी जैसी महान उपाधि पर रहे। उनके इन्ही कारनामों के कारण सन 1995 में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव जी द्वारा उन्हें 25000 रू. तथा एक प्रमाणपत्रा दिया गया। इसके अलावा जनाब अनीस अहमद, चौ. मुनव्वर हसन वर्तमान एम.पी. मु. नगर के खास सिपहसालारों में से एक थे। 11 जून सन 2004 में सांय 7 बजे दिल का दौरा पडने से इस जवान की मौत हो गई।

यू.पी. केसरी जनाब अनीस अहमद का एक सपना था कि कैराना नगर के नौजवान पहलवानी के क्षेत्रा में आगे चलकर उनकी तरह कैराना नगर का नाम यू.पी. में ही नही बल्कि पूरी दुनिया में ऊँचा करें। जिसके लिए उन्होनें मरते दम तक कैराना नगर में एक व्यायमशाला–अखाडा खुलवाने के लिए प्रयास किए, लेकिन उनका यह सपना सपना ही रहा।

नगर की जनता क्षेत्रा के प्रतिनिधियों से माँग करती है कि यू.पी. केसरी रहे जनाब अनीस अहमद मरहूम के इस सपने को हकीकत का रूप देते हुऐ कैराना नगर में एक अखाडा सरकारी खर्च पर बनवाया जाये जिसमें व्यायाम के आधुनिक तकनीकी यंत्रा उपलब्ध हों। जिससे कैराना नगर के नौजवान प्रशिक्षित होकर पहलवानी के क्षेत्रा में कैराना नगर का नाम पूरी दुनिया में ऊँचा कर सकें।
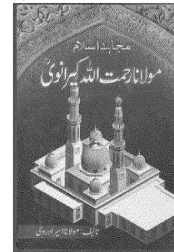
लेखकः मौलाना मुहम्मद सलीम साहब,
नाजिम मदरसा सौलतिया मक्का मोअज़्ज़मा 2 जौलाई 1952 ई.
हिन्दी रूपांतर : हाजी मास्टर शमसुल इस्लाम मज़ाहिरी
''यह उर्दू पुस्तक वेबसाइट में हिन्दी और इंग्लिश में उपलब्ध है।''

उर्दू पुस्तक ''एक मुजाहिद मेमार'' में कैराना की झलक

.........कलमी याददाश्तों से मालूम होता है कि **कस्बा कैराना** कदीम जमाने में चौहान राजपूतों की राजधानी रह चुका है। जोन्डला और बान्सा जिला करनाल में जो चौहान आबाद थे उनके मूरिस आला राणा हुर्रा की औलाद में से राणा कलसा कैराना का हुकमरान था। जिसकी वजह से कस्बा और निवाह के चौरासी (84) गाँव ''कलसियान गूजर'' कहलाते हैं। राणा कलसा चौहान राजपूत था मगर कैराना और उसकी निवाह में गूजर कौम आबाद थी इसलिए राणा ने इस क़ौम मे शादी की। राणा कलसा सुलतान मेहमूद गज़नवी का मुआसिर था। सुलतान मेहमूद गजनवी के जमाने में सुलतान की इजाजत से सैयद सालार मसऊद गाज़ी रह. मुजाहिदीन की एक बडी तादादके साथ हिन्दुस्तान पर हमलावर हुए और झिन्झाना होकर कैराना पर हमला किया। शहर के शुमाली और गरबी निवाह में आजतक मजारे शुहदा मौजूद हैं। एक कबर चन्द गज तवील शहर के शुमाली जानिब में है जो अरब शुहदा की क़ब्र बताई जाती है। इसमें बहुत से शुहदा को एक जगह दफन कर दिया गया है। सय्यद सालार मसऊद गाजी रह. के कैराना पर हमले की यादगार आजतक सालारी क़ौम कस्बा में मौजूद है। यह अरब नज़ाद क़ौम कस्बे में शुतरबानी का काम करती है और ऊँट उनका ज़रीया–ए–मआश हैं। कैराना में सबसे पहले यही सालारी क़ौम आबाद हुई सलातीने तुगलक के जमाने में शेख अलाउद्दीन अन्सारी इस निवाह के मन्सबे कज़ा पर मुकर्रर हुए। उस वक़्त से अन्सार कैराना में आबाद है। शेरशाह के जमाने में ''काकडजई'' अफगान आबाद हुए। जिनकी औलाद आजतक मौजूद है।

........शाहजहाँ जब तख्त नशीन हुए तो नवाब मुकर्रब खाँ को मजीद ईनाम और इकराम के साथ मुजाफात कैराना के परगने जागीर में अता हुए। नवाब मुकर्रब खाँ के लडके हकीम रिजकुल्लाह, शाहजहाँ के तबीबे दरबार और हश्त सदी मन्सबदार थे। हजरत औरंगज़ेब आलमगीर रहमतुल्लाह अलैहे ने हकीम रिजकुल्लाह को खिताब ''खानी'' मरहमत फरमाया। 1668 ई. में हकीम रिजकुल्लाह साहब ने वफात पाई।

........915 हिजरी में फरमाने अकबरी के मुताबिक कैराना व मुजाफाते कैराना नवाब मुकर्रब खाँ को बतौर जागीर अता हुआ तो

उस्मानीयुन्नसब जलाली खानदान का यह हिस्सा पानीपत की सकूनत तरक करके कैराना में आबाद हुआ। इस मामूली कस्बे की तोसी व तन्जीम की गई। कस्बे से बाहर नवाब मुकर्रब खाँ और दीवान अब्दुर्रहीम ने अपने महिल्लात, कचहरियां और मुताल्लिकीन रियासत के मकानात वगैरह बनाये जो अब कस्बे की आबादी का एक जुज़ है। नवाब मुकर्रब खाँ ने कैराना में आमों और दीगर इक्सामों के फलों का बाग लगाया जिसमें गुजरात दक्कन और दूर दराज़ ममालिक से आमों के दरख्त मंगा कर लगाये। एक सौ चालीस बीगह इस बाग का रक्बा था। बाग के वस्त में दो सौ बीस गज लम्बा दो सौ गज चौडा हौज **(तालाब)** बनवाया। हौज के अन्दर माहताबी वगैरह बीस गज मुरब्बा में बनवाई। इस हौज में जमना का पानी एक तरफ से आता और दूसरी तरफ से निकलता था। सर्द और गर्म मुल्कों के दरख्त नसब कराये। सोलवीं जलूस में जहाँगीर खुद कैराना आया। इस बाग की तफसीलात '' तुजके जहाँगीरी'' में मौजूद है। जहाँगीर लिखते हैं:

''मुखलिस व मुहिब्बे खास, यार वफादार मुकर्रब खाँ मुतमन्नी था कि मैं उसके यहाँ आऊँ मैंने उसके घर को कुदूम मैमनत लुजूम से काबिले रश्क बना दिया और इस खैर खवाह क़दीम को बेशकीमत सामान, कीमती जवाहरात तीन लाख रूपये, एक बाग और एक वसी मकान दिया।''

नवाब मकर्रब खाँ कैरानवी के लगाये हुये बाग के आम हस्बे रिवायत ''ताजुल मआसिर'' मुद्दतों तक देहली में मशहूर और मरगूब रहे। वह पुरानी दुनिया अगरचे इन्कलाब 1857ई. में उजड चुकी मगर यह यादगारे जमाना बाग जिस जमीन पर कायम था वह अब भी **''नौलखा जमीन''** के नाम से मारूफ है। मशहूर है कि इस बाग में छोटे बडे हर किस्म के नौ लाख दरख्त थे। बाग में नवाब मुकर्रब खाँ की बनाई हुयी बारादरी भी मौजूद है जिस जमाने में नवाब मुकर्रब खाँ गुजरात के गवर्नर थे और बन्दरगाह सूरत भी उनके ज़ेरे असर थी उस वक्त उन्होंने अपनी हिकमत अमली से सात जहाज जो मुद्दत से गर्क़ाब थे समन्दर से निकलवाये। अलावा दीगर अशया के **कसौटी** (संगे समाक) के चन्द सतून नादिरूल वजूद भी बरामद हुये। इन अशया की इत्तला शहन्शाह जहाँगीर को दी गयी शाही हुक्म से यह तमाम सामान नवाब मुकर्रब खाँ को अता हुआ। मजकूराबाला तालाब के वस्त में चबूतरे पर जो बंगला तामीर किया गया था उसमें कसौटी के यह सतून लगाये गये थे जो अब हजरत बू अली शाह कलन्दर रह. की दरगाह पानीपत में नसब हैं। नवाब मुकर्रब खाँ के इस बाग के मशरिकी जानिब संगीन इमारात का सिलसिला था जो ''दरबार'' के नाम से मारूफ था। यहाँ अदालतें ,फीलखाने और रियासत के दफातिर वगैरह थे। बाग के दूसरी जानिब सकूनती महिल्लात वगैरह थे जो **''नवाब दरवाजा''** के नाम से अब तक मौसूम है, यह पुरानी इमारतें जमाने के नासाजगार हालात और फिर इन्कलाब सन 1857ई. की तबाहकारी में बर्बाद हो गईं। दरबार और नवाब दरवाजा के सरबफलक और आलीशान फाटक,

नक्कार खानं और कुछ इमारतें पुरानी शानो शोकत की याद को जिन्दा और बाकी रखने के लिये अब तक मौजूद हैं। "अद्दवामु लिल्लाह" नवाब साहब का मजार पानीपत में हजरत बू अली शाह कलन्दर रह. के अहाते में मौजूद है। कब्र का तावीज असली जहर मोहरा के एक टुकडे का है जिस का वजन 27 मन का ब्यान किया जाता है। दीवान अब्दुर्रहीम के मजार का अफसोस है कि पता न चल सका गालिबन देहली में महरौली के करीब कहीं है।

हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब रह. की विलादत बा सआदत इसी "मौहल्ला दरबार" में अपने आबाव अजदाद के इन तारीखी मकानात में हुई। बारह बरस की उमर में कुरान खत्म करने के साथ दीनियात, फारसी की इब्तदाई किताबें अपने बुजुर्गों से पढीं, उस के बाद देहली बगर्जे तालीम तशरीफ ले गये और मौलाना मुहम्मद हयात साहब के मदरसे में दाखिल हुये। क़्याम भी मदरसे में रहा सन 1250 हि. में हजरत मौलाना मरहूम के वालिद मौलवी खलीलुल्लाह साहब मरहूम देहली में महाराजा हिन्दुराव बहादुर के मीर मुन्शी मुकर्रर हुये और धीरज पहाडी के करीब उन का क्याम हुआ तो मौलाना अपने वालिद माजिद के पास तशरीफ ले आये। दिन में मदरसा मौलाना मुहम्मद हयात में तालीम हासिल करते और रात को महाराजा को अकबर–नामा सुनाते थे। कुछ अर्से तक हजरत मौलाना मरहूम ने भी महाराजा हिन्दुराव के यहाँ बहैसियत मीर मुंशी काम किया है। तहसीले इल्म का शौक मौलाना को लखनऊ ले गया। चन्द रफका के साथ आप लखनऊ पहुँचे और मुफती सादुल्ला साहब मरहूम से शर्फे तलम्मुज हासिल किया। ....

इन्कलाब सन 1857ई.

परगना कैराना व शामली में जमींदारा शयूख़ और मुसलमान गुजरों के हाथ में था जिन में दीनदारी के साथ जोश भी मोजूद था। थानाभवन और कैराना का एक महाज कायम किया गया। मुजाहिदीन की जमाअत मुदाफअत और मुकाबला करती रही। शामली की तहसील पर हमला किया गया परगना के चारों तरफ इस मुजाहिदाना तहरीक का असर आम हो चुका था। थानाभवन में हजरत हाजी इमदादुल्लाह साहब और मौलवी अब्दुल हकीम साहब थानवी मे् रफका और निवाहे कैराना में हजरत मौलाना मरहूम गोरह फौज का मुकाबला कर रहे थे। मुजाहिदीन कैराना में चूँकि मुसलमान गुजर ज्यादा थे इसलिए इन की कियादत चौधरी अजीमुद्दीन हजरत मौलाना मरहूम के साथ कर रहे थे। (इन्कलाब के बाद चौधरी अजीमुद्दीन मक़्क़ा मुअज्ज़मा हजरत मौलाना मरहूम के पास आ गये थे और यही इन का इन्तकाल हुआ) उस ज़माने में असर की नमाज के बाद मुजाहिदीन की तनजीम व तरबियत के लिये कैराना की जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर नक्कारे की आवाज पर लोगों को जमा किया जाता और ऐलान होता थाः

मुल्क खुदा का और हुक्म मौलवी रहमतुलाह का

इस जुमले के सिवा और जो कुछ कहना होता था वह अवाम को सुनाया जाता। इस पुरानी आवाज को सुनने वालों में से अब कोई नहीं रहा मगर जिन्होंने अपने बुजुर्गों से इस की सदाये बाजगश्त सुनी है वह अब तक मौजूद हैं। कैराना के महाज पर बजाहिर शकिस्त का इमकान न था। मगर बाज अब्नाये वतन की जमाना साजी और मुखबिरों की साजिश ने हालात का रूख बदल दिया। कैराना में गोरा फौज और तोपखाना दाखिल हुआ। मौहल्ला दरबार के दरवाजे के सामने तोप खाना नसब किया गया और गोरा फौज ने मौहल्ला दरबार का महासरा किया। हर घर की तलाशी ली गयी। औरतों और बच्चों और हर शख्स को फरदन फरदन दरबार से बाहर निकाला गया। इसलिये कि मुखबिर ने इत्तला दी थी की मौलाना दरबार में रूपोश हैं। कैराना के करीब "पन्जीठ" मुसलमान गुजरों का एक गाँव है जहाँ हजरत मौलाना मरहूम अपनी बाकी माँदा जमात के साथ पहुँचे। खुद "पन्जीठ" के लोग भी मुजाहिदीन में शरीक थे। इसी दौरान में गोरा फोज के एक घोडे सवार दस्ते ने पन्जीठ का रूख किया। कैराना और कुर्बवजवार के तमाम हालात की इत्तला हजरत मौलाना मरहूम को मिलती रहती थी। पन्जीठ के मुखिया को जब फौज का आना मालूम हुआ तो उस ने जमात को मुन्तशिर कर दिया और हजरत मौलाना मरहूम से ख्वाहिश की कि खुरपा लेकर खेत में घास काटने चले जायें। गौरा फौज उसी खेत की पगडण्डी से गुजरी। हजरत मौलाना मरहूम फरमाया करते थे कि "मैं घास काट रहा था और घोडों की टापों से जो कंकरियाँ उडती थी वह मेरे जिस्म पर लग रही थीं और में उन को अपने पास से गुजरता हुआ देख रहा था"।

गौरा फौज ने गाँव का मुहासरा किया। मुखिया को गिरफ्तार कर लिया गया। पूरे गाँव की तलाशी ली गयी मगर हजरत मौलाना मरहूम का पता न चला मजबूरन यह फौजी दस्ता कैराना वापिस हुआ। हालात पर काबू पालिया गया और हजरत मौलाना मरहूम के खिलाफ फौजदारी मुकदमा चलाया गया। और वारन्ट जारी हुआ आप को मफरूर व बागी करार देकर गिरफ्तारी के लिये एक हजार रूपये के इनाम का ऐलान हुआ। हजरत मौलाना मरहूम अपना नाम "मुसलिहुद्दीन" बदलकर पैदल देहली रवाना हुये। आपके लिये यह सख्त आजमाईश का वक्त था। ईमानी अज्म, हिम्मत और सब्र और इस्तकलाल के साथ जयपुर और जोधपुर के मुहीब रेगिस्तानी जंगलों और खतरनाक रास्तों को पा प्यादा तय करते हुये सूरत पहुँचे। बन्दरगाह सूरत से भी जहाज का सफर आसान न था। बादबानी जहाज चला करते थे। साल भर में सिर्फ एक जहाज हवा की मवाफकत के जमाने में सूरत से रवाना होता और इसी तरह जद्दे से आया करता था। एक खत का महसूल चार रूपये था। जो लोग हिजरत के इरादे से तर्के वतन करते वह साथ ही दुन्यावी ताल्लुकात और बाहमी अलाईक को जिन्दगी ही में खत्म कर दिया करते थे।

त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र0त्र

Miss Sneh Lata Saini
(M.com,P.G.D.C.A.,M.C.A.,
Ex.Executive, excellent college of computer
e-mail: sneh_l_sws@yahoo.co.in,
Mob. 9358897485

MY KAIRANA

Kairana, which called kingdom of karna(Mahabharat). There found any aspect which tell to kairana, A historical place with some events and places such a Devi Mandir, Eidgah, Nawab Darwaja, Nou Lakha Bagh, Nou Gaza Peer and also much more damage remain parts tell a story of mughals, Kairana always remain a eye point of mughal badshah and constructed many important palaces by them. Kairana born many ancient personalities who made their potential efforts to highlight. Mr. Moulana Rehmatullah Kairanvi faced the English debate to protect Hindu & Muslim religious and lead a faith in concern religious since then till today. In field of traditional music Sastri ghan, "kairana gharana" very popular for their contribution Rememberable in music. The founder of "kairana gharana" Abdul Karim Khan very famous in the world for Rag Ghan.

They visit much country such as China America etc. But these facts related with kairana were not visualized, that can provide much more on historical view on kairana. But it completed by Mr. Umar kairanvi in form of book & web site (www.kairana.net). Some other joint effort by Shri Asha Ram thesis on historical kairana and all committee members.

Today youth of kairana imagine a bright future because today exist many faculty such as Academic and Professional Education, Medicals & Banks etc.

If any politician takes interest in historical perspective of kairana. It will become a tourist place.

उमर कैरानवी

नबिया पहलवान

''कैराना मे 1910–50 ई. तक हल्के वजूद के नबिया पहलवान माली (बागबाँ) को मुखालिफ़ पहलवान आश्चर्य से देखता था लेकिन कुश्ती प्रारम्भ होने के कुछ क्षणों पश्चात वह चित और नबिया पहलवान का पैर उसकी छाती पर होता।'' यह कहना है 90 वर्ष के बुजुर्ग हाफिज़ नानू साहब जोकि उस दौर में नौजवान थे और 70 वर्ष के सुलेमान साहब जिन्होंने नबिया का अंतिम दौर देखा है। अधिक जानकारी देते हुये यह बुजुर्ग बताते हैं कि नबिया लगभग 180 किलोग्राम रेत से भरी बोरी को 11 बार खास तरीके से उठाकर फैंकता था यह तरीक़ा मुखालिफ़ पहलवान पर आज़माता था जिससे मुखलिफ पहलवान तीसरी कोशिश तक सदैव चित हुआ। इसे पहलवानी ज़बान में पुटठी मारना कहा जाता है।

नबिया मौलवी फैजुल्लाह साहब (रह.) का मूरीद था जोकि कुश्ती के समय दरबार वाली मस्जिद में चहलक़दमी करते हुये रूहानी तरीक़े से (मानसिक तरंगों द्वारा) नबिया की रहनुमाई करते थे।

यह पहलवान अपनी ज़िन्दगी में एक बार हारा था। हुआ यूं कि मौलवी साहब ने बुध के दिन कुश्ती लडने से मना किया था। बुध को कुछ लोगों ने बहला–फुसला कर छडियों के दंगल में कुश्ती करादी जो यह हार गया। यहां से छडियां गंगोह जाती थी वहां भेष बदलकर नबिया ने उससे कुश्ती का हाथ मिलाया क्यूँकि पराजित से लम्बे समय तक कुश्ती नहीं लडी जाती थी इसलिये भेष बदलना पडा। उसे तीसरी पुटठी में चित कर दिया।

नबिया के पिता नत्थू पहलवान भी काफी मशहूर थे यह दोनों काफी समय तक एक ही दंगल में लडे। एक पहलवान जो पिता से बराबर रहा उसे पिता के मना करने के बावजूद रातों–रात उसके अपने शहर खेकडा में जाकर चित करके दम लिया।

दिल्ली में अंग्रेज़ वायसराय की बैगम के अखाडे का बडा भारी–भरकम पहलवान जो इसके हल्के वजूद के कारण लडने से इन्कार करता रहा को चित करने पर 150 चांदी के सिक्के बैगम से मिले जो अब 2007 में तीस हज़ार रूपये के बराबर हैं।

नत्थू पहलवान की इकलौती औलाद नबिया विवाहित तो था पर कोई औलाद न होसकी। दंगल ना होते तो यह पहलवान अपनी अच्छी आवाज़ में गा–गाकर शहतूत बेचता था।

छडियों के दंगल से पहले इस पहलवान को बिरादरी वाले एक रूपया हर घर से देते थे उस समय एक रूपये का एक सेर घी आता था।

जनाब रियासत अली ''ताबिश'' साहब ने अपनी उपलब्ध उर्दू पुस्तक ''हरीमे अदब'' जिसमें लगभग 50 पृष्ठों में कैराना का इतिहास है अनीस पहलवान माली (बागबाँ) के ज़िक्र के साथ यह भी लिखा है कि नबिया पहलवान माली (बागबाँ) रूहानी विद्वान मौलवी फैजुल्लाह साहब (रह.) का मूरीद और अपने वक़्त का गामा था। 29.7.2007

लेखकः मुन्शी मुनक्क़ा, शायर,फिल्मी गायक एवं कामेडियन उर्दू कविता संग्रह ''कड़वे बादाम'' का एक लेख काट छाँट के पश्चात
हिन्दी रूपांतर : उमर कैरानवी

कस्बा कैराना शरीफ

न छेड़ ए हमनशीं प्रदेस में भूला सा अफसाना
मुझे पहरों रूलाता है मेरा घर मेरा कैराना

यह एक तारीखी कस्बा है। जिसकी तकरीबन पचास हज़ार की आबादी है। पानीपत की लडाई का जो मैदान मशहूर है। वह पानीपत और कस्बे की दरमियाना ज़मीन है। यहाँ के मशाहीर में से वज़ीर जहाँगीर नवाब मसऊद रह. उस्मानी उर्फ मुक़र्रबुल खाक़ान कैरानवी जो हज़रत मखदूम शैख जलालुद्दीन कबीरुल औलिया कलन्दर पानीपती रह. की औलाद में हैं। मज़ार मुबारक आपका पानीपत शरीफ हज़रत बू अलीशाह कलन्दर रह. के अहाते ही में बहुत शानदार बना हुआ है। कलन्दर साहब रह. का मज़ार मुबारक और उसमें कसौटी के सतून नवाब साहब ने ही बनवाये हैं कि यह कसौटी के सतून पहले नवाब साहब की बारादरी वाके कैराना ही में थे। नीज़ तख़्त ताऊस भी आपही का था जो जहाँगीर ने तोहफतन खुद तलब कर लिया था। बाद में नादिरशाह दुर्रानी ईरान ले गया जो आज तक वहीं महफूज़ है। पिछले दिनों शहंशाह ईरान की ताजपोशी की रस्म इसी तख़्त पर अदा की गई।

दूसरे हज़रत मौलाना रहमतुल्लाह साहब उस्मानी मुहाजिर मक्क़ा जो इलम तकवा में लासानी थे और मदरसा सौलतिया मक्क़ा मुकर्रमा भी आपने क़ायम करके जिनकी ज़बान उनको अरबी पढाई। आज भी आपके पडपोते शेख मुहम्मद सलीम बहेसियत निगरॉ वहीं मुक़ीम हैं जो कि शाह की नज़रों में महबूब और मुअज़्ज़म हैं।

दरगाह शाह गरीबुल्लाह जिन्होंने औरंगज़ेब की मौजूदगी में कांटो पर कव्वाली सुनी थी कैराना में थे।

दूसरे बुजुर्गों के अलावा कैराना में एक ही ज़माने में तीन मुहम्मद इब्राहीम हुए हैं। तीनों बडे बुज़ुर्ग थे। पीरजी मुहम्मद इब्राहीम साहब उस्मानी की वजह से कैराना ''कैराना शरीफ'' मशहूर हुआ। आपकी दरगाह पर उर्स में पाकिस्तान और दूसरे मुल्कों से मेहमान आते हैं।

पीरजी इज़हार उस्मानी उर्फ आशिक़ कैरानवी पाकिस्तान

के मशहूर शायर हैं।

दूसरे फनून के माहीरीन में सैयद इनायत हुसैन साहब जो हैदराबाद रियासत में तैराकी के मुकाबले में अन्तर राष्ट्रीय इनाम के मालिक थे। उनके बारे मशहूर है कि दरिया में तैरते हुए नाई से दाढ़ी बनवा लेते थे। निजाम की हकूमत के ज़माने तक आपके पोतों को पाँच सौ रूपये वज़ीफा हर महीने मिलता रहा।

☆ पहलवान इरशाद अहमद ने 10 साल पहले 35 मिन्ट अकेले शेर से कुश्ती लडकर उसे मार डाला।

☆ सैयद काले साहब को मुँह से तबला बजाने में इतनी महारत थी कि हाथ से तबला बजाने वाले हैरान थे।

☆ गीतकारों का तो यहाँ अन्तर राष्ट्रीय शोहरत का मामला है। कैराना घराना मशहूर है यहाँ की राग रागनियाँ सबसे अलग और अच्छी मानी गईं। कैराना का नाम सुनकर बडे बडे गीतकार एअहतराम से कान पर हाथ रखते हैं, दुन्या–ए–संगीत ने आज तक इन सपूतों का जवाब पैदा नहीं किया।

☆ बन्दे अली खाँ बीनकार जो वली सिफत इन्सान थे। बारा साल कलियर शरीफ में चिल्ला किया। आज भी जो बीनाकार दुनिया में मशहूर है उन्हीं का पोता और शागिर्द है।

☆ अब्दुल करीम खाँ साहब जिनके रिकार्ड आज तक लोगों ने बेशकीमत समझकर रखे हुये हैं। अपनी यूरोप की यात्रा में मैंने 55रिकार्ड देखे और सुने। खाँ साहब ने पूना में कुछ शागिर्दों से मायूस होकर कह दिया कि कुत्ते गा सकते हैं मगर आपमें यह क्षमता नहीं है। फिर अब्दुल करीम खाँ ने दो कुत्तों को राग सिखा दिये जो बाकायदा प्रोग्राम पेश करते थे। एच. एम. वी. कम्पनी के ग्रामोफोन रिकार्ड पर जो कुत्ते को राग सुनते हुए दिखाया गया वह अब्दुल करीम खाँ के एज़ाज़ में ही है। भारत सरकार ने आल इण्डिया रेडियो देहली में विशेष रूप से बडी मूर्ती बनवाकर प्रवेश द्वार के करीब लगा रखी है।

☆ बहरे वहीद खाँ आज भी राग रागनियों के वर्ल्ड चेम्पियन अमीर अहमद खाँ साहब साकिने लोहारी आप ही के शागिर्द हैं।

☆ मौजूदा ज़माने में अब्दुश शकूर खान सारंगी नवाज़ को पिछले दिनों सरकार ने अपनी तरफ से रूस भेजा था।

☆ उस्ताज फैयाज़ खाँ– मुम्बई, उस्ताद समद खाँ साहब और शरीफ खाँ साहब लाखों में एक हैं भाई निज़ामुद्दीन, भाई इस्माईल, भाई नज़ीर बे बदल कव्वाल हैं।

☆ हकीम तो यहाँ इतने अच्छे और अधिक हुये कि कस्बे का दूसरा नाम ही हकीमों वाला है।

<u>नोटः जैसा है वैसा ही पढने के लिय उर्दू में कैराना वेबासाइट पर पढें।</u>

मेहरबान अली कैरानवी
सम्पादक ''कलम करेगी धमाका''
संवाद दाताः मुज़फ्फर नगर बुलैटिन

चाँदनी महल (परियों का आस्थाना,डेरा)

कैरानाः शामली कस्बे के बीच, भूरा कंडेला गांवों के राजबाहे की पटरी के निकट प्रसिद्व चाँदनी महल (परियों का आस्थाना,डेरा) आज वीरान होकर अपनी दूरदशा पर तो आंसु बहा रहा है लेकिन सैंकडों बरसों के बाद आज भी यहॉ पहुॅचने वाले अक़ीदतमंदों को फेज़याब कर रहा है।

अकीदतमंदों का कहना है कि यहॉ जो भी सच्चे मन से आकर दरूदो पाक–फातिहा आदि कलाम पढ़ अल्लाह से इन बुजुर्गों के वसीले से दुआएं मांगता है अल्लाह उनकी मुराद ज़रूर पूरी करते हैं।

मालूम हुआ कि रात के समय में हर जुमेरात एवं पीर को यहां परियों एवं नेक रूहों की रूहानी मजलिसें भी होती हैं। इस लिए इसे परियों का डेरा भी कहा जाता है। में खुद भी यहां से फेजयाब हो चुका हूॅ।

000000000000000000000000000

नवाब दरवाज़ा

कैराना की शान थी मुझ से, कहते हैं मुझे नवाब गेट
कुछ वक़्त गुज़रने पर ऐ दोस्त! बच्चे कहेंगे कहॉ है नवाब ग ` ट ।

उमर कैरानवी

000000000000000000000000000

पिछले 55 सालों से हम अपने नेता से अपनी गलियों, सडकों की

मरम्मत की बार–बार गुज़ारिश करते हैं।

क्या कभी हमने, कस्बे की ऐतिहासिक इमारतों की मरम्मत के लिए गुज़ारिश की है?

जिस से हमारी गली की नहीं, पूरे कस्बे की शान बढ़ेगी।

लेखकः अब्दुस समी कुरैशी उर्फ गालिब कैरानवी
हिन्दी रूपांतर : उमर कैरानवी

नज़्म

विषयः कैराना के अनमोल हीरे

कस्बा यह राजा किरण के नाम से मन्सूब है
नाम कैराना है इसका नाम भी खूब है
एक मुकर्रब खाँ हुये इस शहर में ऐसे अलीम
बादशाही दौर में थे बादशाही वह हकीम
बाद में वह उस हकूमत में रहे बनकर वज़ीर
उनका सानी न था कोई आदमी थे बे नज़ीर
उस हवेली में अभी वह आब तक मौजूद है
है तो बोसीदा मगर तालाब तक मौजूद है
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
इस ज़मीं पर आदमी होते हैं ऐसे बाकमाल
जंगे आज़ादे में जिनकी लोग देते हैं मिसाल
आप बेशक मौलवी थे रहमतुल्लाह नाम था
सबको आज़ादी मिले उनका यही पैगाम था
जब हकूमत ने गिरफ्तारी का आर्डर कर दिया
आपने जाकर मदरसा मक़्क़ा में कायम किया
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
आप दरिया इल्म के थे नाम था उनका वहीद
और तखल्लुस था ज़माँ कुछ भी नहीं इसमें बईद
उनकी मेहनत का नतीजा है जहाँ में यह किताब
अरबी लोगों के लिए जो है मुकम्मल कामयाब
लफ़्ज़ लगता है हर एक जैसे कमल का फूल है
अरबी लोगों में लुगत उनकी बडी मक़बूल है
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
एक अजब फनकार थे कैराना में अब्दुश शकूर
उनको सारंगी बजाने का जहाँ में था शऊर
आपने कुछ इस कला में काम ऐसे हैं किये
फिर हकूमत की तरफ से रूस वह भेजे गये
गज़ चलाने की जो देखी आपके जादूगरी
इस हकूमत ने नवाज़ा फिर पदम देकर श्री
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
वह मुसव्विर है अजब और नाम है उसका जमील
नक़्श देखे जिसने उसके हो गया उसका खलील

वह बशर लन्दन में अपने काम पर मा'मूर है
अपने फन में सारी दुनिया में बहुत मशहूर है
उनका आलीशान पाकिस्तान में है अपना घर
हाथ में कुदरत ने बख्शा है अजब उनके हुनर
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
इल्म मोसीक़ी में सबसे आगे थे अब्दुल करीम
राग सारे जानते थे राग के थे वह हकीम
हैं बहुत शागिर्द उनके जिनके वह उस्ताद थे
जितने सुर हैं राग के सारे ही उनको याद थे
बुख्ल वह करते नहीं थे देखो अपने काम से
आज ''कैराना घराना'' है उन्हीं के नाम से
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
सारी दुनिया जानती है नाम उसका है शबाब
नाम कैराना का उसने यूँ किया ऊँचा जनाब
वह पडोसी मुल्क को इस शहर की ही देन है
रूह उनकी इस ज़मीं के वास्ते बे चैन है
यूँ जहाँ से उसने अपनी जान पेहचान की
फिल्मी दुनिया में बसे वह जाके पाकिस्तान की
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
इस सियासत में बशर अब एक ऐसा खो गया
सात पहले हैं अजूबे आठवाँ वह हो गया
एम. पी. वालिद है उसका, नाम है अख़्तर हसन
जिसके दम से फूटती है एक सियासत की किरण
नाम है उसका मुनव्वर दिल में ऐसी लगन
उमर में थोडी सी उसने देखे हैं चारों सदन
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
इस तरक़्क़ी पर हुकुम सिंह की हमें भी नाज़ है
उनके अपने काम का सबसे अलग अन्दाज़ है
यू.पी. लेविल के रहे वह ऐसे काबिल मन्त्री
आगे पीछे देखे हमने रहते उनके सन्तरी
शहर का कालिज विजय सिंह उनके दिल का चैन है
हास्पिटल, सब्ज़ी मण्डी यह भी उनकी देन है
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
चेयरमैनी कर गये वह शहर में ऐसी बशीर
नेक दिल इन्सान है वह आदमी है बेनज़ीर
शहर के लोगों में है अपना अलग उसका मुक़ाम

हर बशर को देखते ही पहले करते हैं सलाम
आदमी को इतनी इज़्ज़त यह भी कुदरत की है देन
तीस पैन्तीस साल कस्बे के रहे वह चेयरमैन
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
रज़्मी है उनका तखल्लुस और मुज़फ्फर नाम है
शायरी में दर्स देना उनका पहला काम है
इस अदब की दुनिया में उनकी यही पहचान है
एक लम्हों की खता के नाम से दीवान है
वक़्त के हाकिम ने अपने घर बुलाया आपको
और बडे ऐज़ाज़ से उसने नवाज़ा आपको
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
एक कैराना में कौसर और हैं आली मुकाम
शायरी में पुख्तगी है उनका ऊँचा है कलाम
दिल के जो अरमान थे उनके सभी पूरे हुये
उनके बेरूनी मुमालिक के कई दौरे हुये
सब नसीहत उनकी देखो रहती मेरे याद हैं
शायरी में देखो 'ग़ालिब' के वही उस्ताद हैं
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।
अब उमर कैरानवी करता है तुम से यह खिताब
उर्दू, हिन्दी और इंग्लिश में लिखा होगा जनाब
इस जहाँ में हर जगह यह जानकारी देखिये
आप इन्टरनेट पर मेहनत हमारी देखिये
सारी दुनिया को यहाँ से दे रहा हूँ सदा
अब उमर का मुद्दतों में ख्वाब पूरा हो गया
जिसने अपने शहर का रूतबा बढाया खूब है।
नाम से कैराना के वह शख़्सीयत मन्सूब है।

.....

King Jahangir wrote about "Bagh & Talab" : On, Sunday, the 16th, I marched from delhi, and on Friday the 21st, halted in the pargana of Kairana, This pargana is the native place of Muqarrab K. Its climate is equable and its soil good. . Muqarrab had made buildings and gardens there. As I had 'often heard praise of his garden, I wished much to see it. On Saturday, the 22nd, I and my ladies were much pleased in going round it Truly, it is a very fine and enjoyable garden. Within a masonry (pukhta, pucca) wall, flower-beds have been laid out to the extent of 140 bighas. In the middle of the garden he has constructed a pond, in length 220 yards, and in breadth 200 yards. In the middle of the pond is a miih-tiib terrace (for use in moonlight) 22 yardssquare.There is no kind of tree belonging to a warm or cold climate that is not to be found in it. Of fruit-bearing trees belonging to Persia I saw green pistachio-trees, and .cypresses of graceful form, such as I have never

seen before. I ordered the cypresses to be counted, and they came to 300. All round the pond suitable buildings have been begun and are in progress.**(Tuzuk-i-Jahangiri or memoirs of Jahangir**,Tanslated by Alexander Rogers, Atlantic publisher, Drya ganj, New delhi-2, page112, v2)

..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0.

Jamil Naqsh (Pakistan's leading artists): Kairanvi His persona is reclusive, elusive, almost solitary and his work - it is exclusive, abstruse and almost rarefied. Jamil Naqsh, an enigmatic artist, lives his life on his own terms, calls his own shots, does exactly what he wants to do and in doing so maintains his position as one of Pakistan's leading artists. A brilliant contemporary painter, his success story is an amalgam of immense talent, creativity, labour, single-mindedness and of course strategy. The Naqsh mystique has been engineered and it is very much there. A ploy it may be but it is a charming one at that, for it adds that something extra to his artistic genius, shifting his work to a much higher plane. This success story unfolded in the peaceable, romantic environs of distant **Kairana** in the U.P. Province of India, where the young artist was born in 1939, in a cultured Muslim zamindar family. Young Jamil was nurtured in a climate of creativity, where artistic, musical and literary pursuits were freely practiced. His childhood memories are entwined amidst family pets - horses, cats, pigeons and a favourite goat - kite flying, chess, shikaar, Persian and Urdu poetry, classical music together with prayers and fasting. At the age of nine, in 1947, the trauma of displacement that came with partition hit the growing child harder than most others. Having lost his mother when he was five, Jamil migrated to Pakistan with his elder siblings, but his father remained behind - never to meet again. Bereft of parental moorings, unsettled Jamil trekked back home in his early teens, perhaps to recapture a lost childhood - but it was not to be. For two years he journeyed through Chittagong to Calcutta, Khatmandu to Colombo, Peshawar to Karachi. In 1953 his journey ended in Lahore, where he joined the Mayo School of Arts & Crafts. Mayo School of Arts & Crafts. As a student of Mayo, the young Jamil got his first taste of modern art. Pioneer modernist Shakir Ali had just arrived in Lahore after his sojourn abroad. His concepts on rudiments of contemporary art were a breath of fresh air for the young artists in the making, Jamil Naqsh including. However, keeping in mind the traditional ambience of Kairana, the artist's childhood home, his love for the classical and the oriental in arts was a very natural preference. At the Mayo school he was introduced to the art of miniature painting courtesy, the renowned Ustad Haji Sheriff. Soon Jamil Naqsh abandoned his study courses at Mayo to work full time with Ustad Sheriff. Thus began his grounding in this discipline. Working from morning to dusk he imbibed technique, methodology, and unique intricacies peculiar to Mughal miniature painting. At this juncture, developments in modern art in Pakistan were rapid, popular and eagerly accepted. The synthesis of abstraction and finesse of miniature apparent in Jamil's work now probably had its origin in that early educative phase when he was learning in a climate of twin exposures. Album painting and non-objective art are mutually contradictory but Jamil Naqsh borrowed the best of both to create his own aesthetic vocabulary, which then became his signature style.

जीदोरू **ूण्हमजचांपेजंदण्बवउ**

लेखकः **उस्ताद सफी कैरानवी**——हिन्दी रूपांतर : उमर कैरानवी

पुस्तक ‘कैराना शरीफ’ उर्दू में है जिसमें 250—300 शे’रों में कैराना की तारीख भी बयान की गई है। कुछ शे’र चुनकर दिये जा रहे हैं।

☆कैराना शरीफ☆

न अगर कुफ्र का खौफ होता मुझे
जहाँ भर से अच्छा कहता उसे(इसे)।
बहुत खूबसूरत हैं सीरत में नेक
यहाँ सौ हैं दुनिया में है कोई एक।
गये मक्का में रहमतुल्लाह मियाँ
किया इल्म का वॉ से दरिया रवाँ।
यहाँ पहलवान हैं जिनों से लडे
सरे दस्त झोटा उठा ले उडे।
इसे कब कर्ण ने बसाया था पर
सख़ावत का अब तक है हम में असर।
मुसलमान गूजर जो पहला हुआ
तो उसका हसन नाम रखा गया।
यहाँ के हैं सब केस्त आला नसब
सहारनपुरी के आये हैं सब
पठानों में कूडा था एक नाम का
किसी से न कुश्ती में वह चित हुआ।
यहाँ के जुलाहे भी अन्सार हैं
कि अयूब रज़ि. के खास दिलदार हैं।
वह जिस्तर पे देवी का मन्दिर है एक
ब तरतीब मन्दिर में मन्दिर है एक।
है खुश मन्ज़र और खुश फिज़ा बहार
बने जिसमें बे मिस्ल नक़्श ओ निगार।
कहें जिसको जिस्तर वह तालाब है
बडा लम्बा चौडा है पुर आब है।
यहाँ के धोबी भी हैं ज़ी शऊर
जो दामन से धब्बे को करते हैं दूर।

मक़ामे ग़रीबुल्लाहे(रह.) बाक़ी है यहाँ

सदा फैज़े फैज़ुल्लाह(रह.) जारी है यहाँ।
यहाँ पीर बाले हैं बाले मियाँ
जो हैं नौ गज़ी कब्र के दरमियाँ।
यहाँ पन्ज आबी बिसाती भी हैं
यह हैं नेक और नेकों के साथी भी हैं।
दशे सुर हैं बेखुद वह आली जनाब
लिखी रामलीला की जिसने किताब।
वह थे कौन उस्ताद अब्दुल करीम
नहीं कोई जिनका अदील व सहीम।
वहीदुज़्ज़माँ हैं वहीदुज़्ज़माँ
मयूजिक बदन है ब रूहे रवाँ।
शकूर अपना फन लेके पहुँचे जो रूस
गये अहले रूस अपने फन तक से रूस।
यह लिखना है बन्दे अली को क़लम
कि ले तानसेन उनके आकर क़दम।
यहाँ सात चौपड के बाज़ार हैं
गली कूचे इस जा के गुलज़ार हैं।

यहाँ ईदगाह भी है एक दिलरूबा
बडी दिल कुशा है बहुत खुशनुमा।
पडी जैसे सूरज की इस पर निगाह
तो आता है रोज़ाना वक़्ते पगाह(सुबह)।

वह ख़ााने मुकर्रब थे आली जनाब
मुकर्रब जहाॅगीर के कामयाब।
हसन नाम उनके पिदर का बहा
जहाँगीर के साथ खोला पढ़ा।
जहाँगीर अब तक वही था सलीम
मुकर्रब कहा इसको रखा नदीम
सलीम और हसन में बडा पियार था
हर एक जाँनिसारी को तैयार था।

लगाया था नौलखा एक बाग भी
लगे आम व अमरूद सेब व बही।

दरखात इसमें लाखों किस्म के लगे
सभी सब्ज़ व शादाब फूले फले।
कहें हिन्द में पिस्ता फलती नहीं
मगर बागे बंगला में फूली फली।
बना बाग में हौज़ सीमीं सिफत
इसे संग और गच से किया है करखत।
शिमाल और मग़रिब में दरवाज़ा चार
कि ताके धूप में लोग पायें क़रार।
शिमाल और मशरिक़ खुले घाट हैं
दक्कन की तरफ भी यही ठाट हैं।
नया चबूतरा माहताबी भी है
कमर खासियत में कि आबी भी है।
जो नापा गया हौज में चबूतरा
छियासठ फुटों में वह लम्बा हुआ।
पडीं छोटी छोटी सी थी किश्तियाँ
बत्तखों की तरह हौज़ में फिरतियाँ।
यह छ सौ पिचहत्तर का लम्बा है हौज़
मगर चौदह फुट पुख्ता ऊँचा है हौज।
यहाँ जमना से पानी आता रहा
निकल करके झरनों से जाता रहा।
चली झरनों से पुख्ता लम्बी नहर
गई बाबा पिटटी में जाकर ठहर।
गढ़ी में नहीं काम शाहों से कम
पर अब इसकी हालत पे है दीदा नम।
जहाॅगीर दो बार आया था यहाँ
वह ही दो हैं दरबार ख़ुर्द व कलां।

जो थे बागबानी को यहाँ बागबाँ
उन्हीं की है औलाद माली यहाँ।
ग़दर में गुलामी से आ आ के तंग
लडे अहल कैराना की खूब जंग।

खुली मुझ पे अब तक न यह गुलझटी
सवा पहर क्योंकर है कंकर लडी।
बडे चार दरवाज़ा चारों तरफ
दो बाक़ी हैं और दो हुए बर्तरफ।

यहाँ तेलियों में था रहमू नवाब
ढला इसकी क़िस्मत का जब आफ़ताब।
चला करने मज़दूरी किस शान से
लिया पल्ला मख़मल का दुकान से।
नहीं उम्दगी में कुछ इसके कलाम
जिसे दुनिया कहती है बाडा इमाम।
जिन्होंने किया मुख़्तसर यह बयाँ
सफी है तखल्लुस, हैं महमूद खाँ।

नोटः पूरी किताब जोकि उर्दू में है पढने के लिय कैराना वेबासाइट देखें।

Book: **Izhar -ul- Haq** By: **M Rahmatullah Kairanvi**
Published in **London** (www.taha.co.uk)

English Translation of: **Izhar -ul- Haq** The Truth Revealed Parts 1-2 and 3 By M Rahmatullah Kairanvi Paperback 474 Pages Ref: 139 ti Price: £9.95 Originally written in Arabic under the Title Izhar ul Haq by the distinguished 19th century Indian Scholar Maulana Rahmatullah Kairanvi and appeared in 1864. Well before the now famous Muslim-Christian Debates by Ahmad Deedat of South Africa Maulana Rahmatullah was **challenging the Christian offensive against Islam in British India**. In a debate which took place in January 1854, in Akbarabad in the City of Agra. The Rev C C P Founder (who had written a book in Urdu to cast doubts into the minds of the Muslim) admitted that there were alterations in the Bible in seven or Eight places to which the Maulana commented "If any alteration is proved to have been perpetrated in a particular text, it is considered null and void and invalidated. This and other debates proving Islam to be the true religion was part of the trigger which lead to the Brutal British aggression against the Muslims of India in 1857 in which thousands of Ulemah were killed, Maulana Rahmatullah was at the top of the list, but Allah saved him and took him to Makkah where he established The **Madrasa Saulatia**.

धन्यवाद : जावेद रजा, सचिव, छात्र संगठन 2005

विजय सिंह पथिक राजकीय महाविद्यालय, कैराना

विजय सिंह पथिक राजकीय महाविद्यालय कैराना, मुजफ़्फ़र नगर की स्थापना 5 नवम्बर, 1999 को माननीय श्री हुकुमसिंह जी के विशेष प्रयासों से क्षेत्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तथा इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा का लाभ यहाँ के निवासियों को प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। 11 मार्च 2000 को इस महाविद्यालय की आधारशिला तत्कालीन केन्द्रिय भूतल परिवहन मन्त्री श्री राजनाथ सिंह के करकमलों द्वारा उत्तर प्रदेश शासन के तत्कालीन संसदीय कार्यमन्त्री माननीय श्री हुकुमसिंह जी की अध्यक्षता में रखी गई थी।

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा भवन निर्माण के लिए स्वीकृत धनराशि के अतिरिक्त माननीय श्री हुकुमसिंह जी ने विधायक निधि से चाहरदीवारी तथा प्राध्यापक आवास निर्माण के लिए सहयोग प्रदान किया। महाविद्यालय की कक्षाएँ आरम्भ में अपना भवन न होने के कारण पब्लिक इण्टर कालिज, कैराना में उपलब्ध कराए गए पाँच कक्षों में चलाई गई।

महाविद्यालय की स्थापना के समय उच्च शिक्षा विभाग एवं शिक्षा निदेशालय उत्तर प्रदेश ने कला संकाय एवं वाणिज्य संकाय में शिक्षण कार्य आरम्भ करने की अनुमति प्रदान की। इस समय महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर कला संकाय में हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, भूगोल, इतिहास, राजनीतिक शास्त्र, समाज शास्त्र, शिक्षा शास्त्र, सैन्य विज्ञान तथा गृह विज्ञान, वाणिज्य संकाय में बी.काम, विज्ञान संकाय में भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, वनस्पति विज्ञान, जन्तुविज्ञान, गणित, कम्पयूटर विज्ञान, बायोटैक्नालॉजी एवं बी.एस.सी. गृह विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय में एम. काम. के अतिरिक्त हिन्दी, अंगेजी, इतिहास, राजनितिशास्त्र तथा समाजशास्त्र विषयों में स्नातकोतर स्तर पर अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है।

.....0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0..0.....

तरतीबः उमर कैरानवी

कौन कब विजय रहा

सांसद डण्च्

पंकज त्रिपाठी

अमर उजाला, 30 मार्च 2004, पृष्ठ 13,

निर्णायक होते हैं जाट और मुस्लिम जीत में जाट और हार में मुस्लिम मतों की भूमिका महत्वपूर्ण

वैसे तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश की राजनीति में जाटों का ही सिक्का चला है। चाहे वह मतदाता के रूप में हों या फिर प्रत्याशी के रूप में अथवा दलों के नेतृत्व की कमान संभालने वालों के रूप में। हर मोड पर जाट वोटरों के ठाठ यह हैं कि अब तक के 13 लोकसभा चुनाओं में एकतरफा मतदान ने उनके मनपसंद नेता को जीत का सेहरा बंधावाया है। किन्तु इस दिलचस्प तथ्य को भी मानना पडेगा कि दूसरे नम्बर पर मुस्लिमों का ही कब्जा रहा है। हर जीत में जाट तो विरोधियों की हार में मुस्लिमों का बडा हाथ रहा है।

कैराना लोकसभा सीट का गणित सीधा होते हुए भी बडा उलझा हुआ है। जाटों का पूर्ण समर्थन आसान जीत के रूप मे सामने आता है, तो मुस्लिमों का एकतरफा मतदान भारी मुशकिलें खडी कर देता है। जीत न सही, लेकिन अपने लक्ष्य यानी दूसरे को हराने में मुस्लिम मतों की निणायक भूमिका रही है। यह भी दिलचस्प है कि जब दो मुस्लिम लडे, तो वोट भी बंटे और मुसलमानों की उदासीनता का सीधे असर मतदान प्रतिशत पर पडा।

कैराना सीट पर वर्ष **1952** के पहले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी महावीर त्यागी को जाटों के एकतरफा मतदान से आधे से अधिक 63.7 प्रतिशत मत मिले थे, वहीं जनसंघ के प्रत्याशी जे आर गोयल को मात्र 13.8 प्रतिशत वोट मिले। इसमें मुस्लिम मतों की रूचि नही रही, तभी निर्दलीय प्रत्याशी गोयल को बराबर वोट हासिल हुए थे। ()नोटः www.muzaffarnagar.nic.in में सहारनपुर–मुज़फ्फर नगर नार्थ अजीत प्रसाद जैन एवं मुज़फ्फरनगर साउथ हीरा बल्भ त्रिपाठी लिखा है .....स.) **1957** के चुनाव में सुंदरलाल को 21.8 तथा अजीत प्रसाद जैन को 17.3 प्रतिशत मत मिले थे। इस चुनाव में भी जाट वोटों ने जीत सुनिश्चित की थी। मुस्लिमों ने मतदान में खास रूचि नहीं दिखाई थी। वर्ष **1962** का चुनाव जाटों

का चुनौती देने वाला रहा। ठाकुर यशपाल सिंहने निर्दलिय चुनाव लडा और कांग्रेस के अजीत प्रसाद जैन को बुरी तरह हराया। उन्हें 48.4 प्रतिशत वोट मिले थे। जैन को महज 29.2 प्रतिशत वोट मिले थे। यहां 66.5 प्रतिशत अब तक का सर्वाधिक मत प्रतिशत रहा। **1967** के चुनाव में मुस्लिमों ने पहली बार जमकर मतदान किया। संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के गैयूर अली खां को 26.4 प्रतिशत वोट मिले। अजीत प्रसाद जैन कांग्रेस को लगातार तीसरी बार हारने से नहीं बचा पाए। जबकि उन्हें 25.9 प्रतिश वोट हासिल हुए थे।()नोटः ण्उन्रींतिदंहंतण्दपबण्पद में **1971**;डप्कज्म्त्डद्धमे शफक्कत जंग...लिखा है...स.) वर्ष **1977** में जाटों ने भारतीय लोकदल के चंदन सिंह को 64.6 प्रतिशत वोट दिलाए, वहीं मुस्लिम मत पाकर भी शफक्कत जंग कांग्रेस 25.5 प्रतिशत वोट पर सिमट गए। **1980** में जाट वोट फिर हावी रहे और गायत्री देवी ने 48.8 प्रतिशत वोट लेकर कांग्रेस के नारायण सिंह को 34.6 प्रतिशत मतों पर समेट दिया था। वर्ष **1984** में अख्तर हसन ने एकतरफा मुस्लिम वोट बटौरे और लोकदल के श्याम सिंह के मुकाबले 53 प्रतिशत मत हासिल किए। सिंह को 30.9 प्रतिशत वोट मिले थे। मुस्लिमों का जोश इस बार जाट वोट बैंक पर भारी पडा। वर्ष **1989** और **1991** में जाटों ने हरपाल पंवार के सिर जीत का सेहरा बांधा। उन्हें 89 में कांग्रेस के बशीर अहमद के मुकाबले 58.9 प्रतिशत वोटों की धमाकेदार जीत मिली।**1991** में भाजपा के उदयवीर सिंह पेलखा को 40.1 प्रतिशत मतों से संतोष करना पडा था। यहां जाट वोटों पर खासी मशक्कत की गई, लेकिन वोट पंवार को ही मिले। **1996** में एक बार फिर मुस्लिम मतों का ध्रुवीकरण हुआ और मुनव्वर हसन की कडी टक्कर मिली क्योंकि उदयवीर सिंह ने जाटों को लुभाया था। यहां सपा प्रत्याशी हसन को 32.75 तथा भाजपा के उदयवीर को 30.97 प्रतिशत मत मिले थे। इस चुनाव में मुस्लिम मत बंट गया तथा बसपा के जिल्ले हैदर को 75 हजार मत मिले। वर्ष **1998** के चुनाव में भाजपा के वीरेंद्र वर्मा ने जाटों का एकतरफा समर्थन हासिल कर मुनव्वर हसन को 62.185 मतों से हराया था। जाट ध्रुवीकरण मुस्लिम वोटों पर हावी रहा।**1999** में लोकदल के अमीर आलम कांग्रेस के साथ मिलकर लडे तथा निरंजन मलिक जाट प्रत्याशी होने के बावजूद दूसरे नम्बर पर रहे। () **2004** में जाट और मुस्लिम ने अनुराधा चौधरी को विजय दिलाई। कैराना में अनुराधा को चौधरी मुनव्वर हसन का सहयोग मिला और मुज़फ्फर नगर सीट पर जाटों ने चौधरी मुनव्वर हसन को सहयोग देकर विजय दिलाई।..स.()

()कैराना और मुज़फ्फर नगर का डण्च् रिकार्ड www.muzaffarnagar.nic.in में देख सकते हैं।()

साभारः ॢ्उन्रंतिदंहंतण्दपबण्पद

VIDHAN SABHA (M.L.A.) Kairana Record:

VIDHAN SABHA ELECTION -

VIDHAN SABHA - **YEAR 1952**

KAIRANA NORTH,SHRI KESHAV GUPT, CONGRESS

KAIRANA SOUTH, SHRI VIRENDRA VERMA, SHAMLI, CONGRESS

VIDHANSABHA **YEAR-1957**

SHRI VIRENDRA VERMA, SHAMLI, CONGRESS

VIDHAN SABHA **YEAR-1962**

SHRI CHANDAN SINGH, KHERI KARMU, INDEPENDENT

VIDHANSABHA **YEAR-1967**

SHRI SHAFFAKAT JUNG,KANDHLA, CONGRESS

VIDHANSABHA **YEAR-1969** (MIDTERM)

SHRI CHANDER BHAN KAIRANA, B.K.D.

VIDHANSABHA **YEAR-1974**

SHRI HUKUM SINGH, KAIRANA,CONGRESS

VIDHANSABHA **YEAR-1977**

SHRI BASHIR AHMAD, KAIRANA, JANTA PARTY

VIDHANSABHA **YEAR-1980**

SHRI HUKUM SINGH,KAIRANA, JANTA (CHARAN SINGH)

VIDHANSABHA **YEAR-1985**

SHRI HUKUM SINGH,MUZAFFAR NAGAR,CONGRESS

VIDHANSABHA **YEAR-1989**

SHRI RAJESHWAR BANSAL, SHAMLI, INDEPENDENT

VIDHAN SABHA **YEAR-1991**

SHRI MUNAWWAR HASAN KAIRANA, JANTA DAL

VIDHANSABHA **YEAR-1993**

SHRI MUNAWWAR HASAN, KAIRANA, , JANTA DAL

VIDHANSABHA **YEAR-1996**

SHRI HUKUM SINGH, MUZAFFARNAGAR5, BJP

VIDHANSABHA **YEAR-1999**

SHRI HUKUM SINGH, MUZAFFAR NAGAR, BJP

VIDHANSABHA **YEAR-2002**

SHRI HUKUM SINGH, MUZAFFAR NAGAR, BJP

() वेबसाइटwww.muzaffarnagar.nic.in पर 1999तक का ही रिकार्ड है()

धन्यवाद : श्री अज़ीज़ अन्सारी, वर्तमान चेयरमेन

अध्यक्ष, नगरपालिका परिषद, कैराना की
वर्ष 1945 से कार्यावधि

	नाम			
	श्री बाबू शरीफ अहमद			
1.	श्री मुबारका अली खॉ	10.1.45	से	14.3.46
2.	श्री बाबूराम मित्तल	23.4.46	से	24.4.47
3.	श्री आसाराम जैन	5.4.48	से	15.3.51
4.	श्री बाबूराम गुप्ता	5.7.51	से	14.12.53
5.	श्री हकीम रियाज अहमद	15.12.53	से	21.2.57
6.	श्री बाबूराम गुप्ता	14.11.57	से	28.5.59
7.	श्री चौ0 बशीरूदीन	11.8.59	से	28.1.61
8.	श्री चौ0 काला (कार्यवाहक)	10.2.61	से	13.11.61
9.	श्री बाबूराम गुप्ता	14.11.61	से	2.6.63
10.	श्री बशीर अहमद	14.12.64	से	6.5.66
11.	श्री बशीर अहमद (कार्यवाहक)	3.6.66	से	21.9.66
12.	श्री श्यामलाल	22.9.66	से	oct. 67
13.	श्री बशीर अहमद	oct. 67	से	21.12.72
14.	श्री महावीर प्रसाद जैन (कार्यवाहक)	रनद 73	से	2.3.73
15.	श्री चौ0 अख्तर हसन	2.3.73	से	2.5.74
16.	श्री मौ0 सईद कुरैशी (कार्यवाहक)	17.5.74	से	15.3.75
17.	श्री बशीर अहमद (कार्यवाहक)	18.3.75	से	21.7.75
18.	श्री चौ0 अख्तर हसन	22.7.75	से	13.9.76
19.	श्री बशीर अहमद	22.12.88	से	3.8.91
20.	श्री नन्हामल (कार्यवाहक)	4.8.91	से	25.9.91
21.	श्री नन्हामल (कार्यवाहक)	3.11.91	से	13.8.92
22.	श्री नन्हामल (कार्यवाहक)	22.12.92	से	19.1.94
23.	श्री बशीर अहमद	1.12.95	से	30.11.2000
24.	श्री अब्दुल अज़ीज़ अन्सारी	1.12.2000	से	30.11.2005
25.	श्री जयचन्द (प्रशासक)			
25.	श्री अब्दुल अज़ीज़ अन्सारी	16.11.2006	से	वर्तमान

...

उमर कैरानवी

यादें वेबसाइट से इस पुस्तक तक

है मुख़्तसर, मगर बातें सारी हैं।
है क़लम मेरी, पर यादें तुम्हारी हैं।।

परम्परा है कि पुस्तक कैसे, क्यों एवं किस उद्देश्य से छपी उस पर कुछ प्रकाश डाला जाए। इसलिए स्मरण ;याददाश्तद्ध को शब्दों में प्रस्तुत कर रहा हूँ। जिसमें नई जानकारियाँ सामने आयेंगी।

साहित्यिक मेगज़ीन ''जदीद अदब'' जर्मन, उर्दू की प्रथम मेगजीन जो सम्पूर्ण वेबसाइट पर भी होती है, जिससे मैं दो वर्ष संबन्धित रहा, पर मुद्रित मेरा नाम उमर कैरानवी देखकर पाकिस्तान की एक बडी संस्था ''ख्वाजा फरीद फाउन्डेशन'' के सेक्रेटरी मुजाहिद जतोई ने पत्र द्वारा सम्पर्क किया और सहायता माँगी कि लगभग 100 वर्ष पूर्व में कैराना के ''मिर्ज़ा अहमद अख़्तर'' जिन्होंने लगभग 50 पुस्तकें लिखी हैं, उनकी उन 10–12 पुस्तकों की तलाश है जो ख़्वाजा फरीद पर लिखी गयी हैं।

इसी कारण मैंने शायर डा. सलीम अखतर से सम्पर्क किया कि जिनका उपनाम अखतर है। कुछ हाथ न आया केवल एक मोहर और दो शे'रों के , मिर्जा अख़्तर की तलाश में अपने इतिहास से लगाव हो गया।

न छेड़ ए हमनशीं प्रदेस में भूला सा अफसाना
मुझे पहरों रूलाता है मेरा घर मेरा कैराना। (मुन्शी मुनक़्क़ा)

इन्हीं दिनों अकबर अन्सारी साहब पुत्र रामू ने हमें एक पुस्तक ''गुल आसारे रहमत'' दी जिससे हमें दिशा मिली, अगली जानकारियों के जुटाने के सूत्र मिले। वेबसाइट में ईदगाह पर लेख अधिकतर अकबर साहब की जानकारियों पर आधारित है। जबकि इस पुस्तक में जो ईदगाह पर लेख है वह मेरी जानकारियों पर आधारित है।

बहुत से लेख और पुस्तकें एकत्र होने पर सोचता था कि उन्हें समाचार पत्रों में छपवाऊँगा या कभी पुस्तक छापूंगा। इन दोंनों विचारों के साकार करने और लेखों को रोचक बनाने के लिये कुछ चित्रों को एकत्र कर लेना भी जरूरी लगा। ऐतिहासिक इमारतों के चित्र लेना अच्छा लगा। लगभग हर गली मौहल्ले की ऐतिहासिक महत्वपूर्ण इमारतों की चाहे वह चोर बना पथर हो या दूर यमुना नदी या बहुत दूर पानीपत में स्थापित कसौटी के स्तम्भ के चित्र सब जमा करता गया, सलीम साहब के साथ होने से उकताहट भी नहीं होती थी।

दरबार दरवाजे का चित्र लेते समय सलीम साहब के जानकार ने 10 सितम्बर 1997 का ''दैनिक जागरण'' समाचार पत्र हमें दिया। जिसमें मामचंद चौहान का एक महत्वपूर्ण लेख ''कैराना जो कभी कर्ण की राजधानी थी'' छपा था। यह लेख कैराना विषय पर की पी.एच.डी. का सार था जो श्री आसाराम शर्मा जी पूर्व प्रधानाचार्य पब्लिक इण्टर कालिज–कैराना ने की थी। इसी लेख को पढकर इच्छा हुई कि इसे हर कैराना वासी पढे, जो कि मेरी तरह कैराना के इतिहास में केवल नवाब शब्द को जोकि नवाब तालाब, नवाब दरवाजे के बारे में सुन लेते हैं के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते।

प्रत्येक उत्साहीजन तक इन ऐतिहासिक जानकारियों के पहुँचाने

का एक ही उपाय समझ में आया कि वेबसाइट बनाई जाए। जो कि सबसे सरल और सस्ता साधन है एवं जिसे दुनिया में कहीं भी कभी भी देखा जा सकता है। इस सपने को साकार करने के लिए अपने अमेरिकन मित्र काशिफ से ई.मेल द्वारा अपनी इच्छा बताई। जिनकी वेबसाइट उर्दुस्तान डाट कोम में मैं भारतीय प्रतिनिधि हूँ। इस वेबसाइट को विश्व में हजारों उर्दू वाले प्रतिदिन देखते हैं। उन्होंने अपने वेबस्पेस से कुछ स्थान मुझे दिया और 2004ई. में www.urdustan.net/kairan नाम से रजिस्ट्रेशन कर दिया।

इसी बातचीत के दौरान मैं दिल्ली में वेबसाइट का प्रशिक्षण ले चुका था। jadeedadab.com & urdustan.comके अनुभव और एवान–ए–गालिब–दिल्ली में कम्पयूटर से सम्बन्धित नौकरी जिसमें सप्ताह में दो दिन के अवकाश में कैराना रहने से वेबसाइट सम्भव हो सकी।

डा. सलीम साहब जो कि कान रोग विशेषज्ञ हैं प्रारम्भ से ही इस उद्देश्य में साथ हैं इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। समाचार पत्र में वेबसाइट का समाचार छपने पर नए मित्र इस उद्देश्य में साथ हो लिए, उनके साथ मिलकर कैराना वेबसाइट समिति बना ली गई। स्नेह लता जिन्होंने कि इस पुस्तक हेतु प्रेरित किया का योगदान उल्लेखनीय है। अमित गर्ग, मुकेश गोयल, साद अखतर सिद्दीकी, मुशर्रफ सिद्दीकी, ज़ियाउल इस्लाम बागबॉ एवं मेहरबान अली कैरानवी के योगदान के बारे में जितना लिखूँ कम है। इक़बाल और ताराचंद जी से बहुत उम्मीदें हैं।

सलीम साहब जैसे जो सर्दी हो या धूप या फिर बारिश स्वयं यह पूछते हैं बताओ अब कहॉ चलना है या क्या करना है। कैराना में ऐसे दो–चार मिल जाते तो इतने समय में बहुत कुछ सम्भव था। अब स्नेह लता, भांजे सलीमुद्दीन और भतीजे ज़ियाउल इस्लाम की दिलचस्पी भी प्रशंसनीय है।

कैराना विषय पर कहीं कोई जानकारी इन्टरनेट पर ढूँढता है उसे हमारी वेबसाइट मिल जाती है। वेबसाइट की सफलता को देखते हुए विचार किया कि साइट का नाम छोटा होना चाहिए जिसे याद रखा जा सके एवं एक से दूसरे को बताने में सरलता रहे। इसलिए 2005में .kairana.net नाम से रजिस्ट्रेशन करा लिया गया। अब साइट दोनों नाम से है लेकिन नई जानकारियाँ चित्र आदि कैराना डाट नेट पर ही डाली जा रही हैं। इसे अब 2007 ई. तक लगभग 3000 बार देखा जा चुका है।

हिन्दी में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं इसलिए उर्दू से हिन्दी में रूपांतर किया गया। इस कारण यह समझना मुश्किल था कि उर्दू शब्द معمار के लिए मेमार, लिखें या मे'मार हालांकि मैमार लिखना मुझे ठीक लगा जबकि हिन्दी शब्दकोष में मेअमार लिखा है। वालिद को अब्बा लिखूँ या पिताजी लिखूँ?

इस पुस्तक के अधिकतर लेख वेबसाइट पर पहले से पढे जा रहे हैं जिनमें कई लेख तो दुर्लभ हैं। रिक्त स्थान में भी महत्वपूर्ण जानकारियॉ दी है। अफसोस कि 64 पृष्ठों की इस पुस्तक में उर्दू पुस्तक ''आसारे रहमत'' और वर्तमान में एकमात्र उपलब्ध उर्दू पुस्तक ''हरीमे अदब'' के बारे में जानकारी न देसका। ऐसा लगता है कि ताबिश साहब शायद स्वयं इसे हिन्दी में छापें। बातें सारी हैं इसमें नहीं तो वेबसाइट में पढ सकते हैं। पुस्तक में देना बहुत कुछ था पर संयोजक के मिलने के बाद कहॉ रूका

जाता है!

इन्टरनेट पर अभी अधिक की पहुँच नहीं हो पाई इसलिए सभी तक अपना इतिहास पहुँचे यह पुस्तक इसका प्रयास है। वेबसाईट में कई पुस्तकें उपलब्ध हैं।

इस पुस्तक में श्री राजेन्द्र कुमार साहब, डा. एन. सिहं साहब प्राचार्य–महाविद्यालय, कौसर ज़ैदी साहब, काज़िम अली ज़ैदी साहब, अन्सार सिद्दीकी साहब, डा. ऐवज़ साहब जो जनपद के पहले ऐसे शायर जिनका दीवान आनलाइन है से मशवरा किया, सभी ने हौसला बढ़ाया।

जावेद रज़ा और शाह रज़ा को अच्छे कामों में सदैव हर तरह से सेवा के लिए तैयार पाया। डा. इसरार क़ासमी और शान–ए–बागबॉ कमेटी ने भी प्रोत्साहित किया।

हमारा सौभाग्य कि यह पुस्तक अब्बा जी अवकाशप्राप्त अधायपक श्री हाजी मौलाना शमसुल इस्लाम मज़ाहिरी बागबॉ ;ड0।0द्ध के सौजन्य से आपके हाथों में है। आपके द्वारा हिन्दी में रूपान्तरित उर्दू पुस्तक एक मुजाहिद मैमार मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी छप चुकी है। इस पुस्तक में अब्बा जी की दिलचस्पी प्रशंसनीय रही। सौभाग्य से आपकी उर्दू, हिन्दी, अरबी, फारसी, धार्मिक एवं इतिहास के असीमित ज्ञान से जो कैराना में अतुल्य है से लाभान्वित हो रहा हूँ। दो बार अरब और तीन बार पाकिस्तान का सफर करने से आपके ज्ञान में और वृद्वि हुई है। आपको मदर्सा सौलतिया–मक्का में क़याम (निवास) के दौरान मक्का की एक बडी संस्था द्वारा बतौर अरबी–फारसी उस्ताद बनाने की पेशकश की गई जो आपने नामन्ज़ूर की, क्योंकि मक्का में जो विवशता के कारण कुछ समय के लिए दफ़न किया जाता है वह आपको पसन्द नहीं।

पुस्तक की त्रुटियॉ हाफिज मास्टर सलीमुद्दीन बागबॉ, और अब्बा जी से दूर कराई गई हैं। यह केवल जानकरियॉ हैं, अपने लेख के बारे में कह सकता हूँ कि प्रयाप्त अवलोकन के पश्चात लिखे हैं। दूसरों की वे जानें या ख़ुदा जाने। पूरी पुस्तक पढेंगे तो जानकारी को अपने आप समझ लेंगे। फिर भी किसी त्रुटि पर दृष्टि पडे तो बताईये वेबसाइट में और दूसरा संस्करण सम्भव हुआ तो उसमें ठीक कर लिया जायेगा।

अब तक मिली ऐतिहासिक पुस्तकों में मुझे 16 पृष्ठ की उर्दू पुस्तक ''कैराना शरीफ'' बहुत पसन्द आई, क्यूंकि इसमें कैराना का इतिहास हिन्दु–मुस्लिम की सभी जातियों के योगदान का ख्याल रखते हुये मन्ज़ूम बयान किया गया है। बार–बार पढने से मुझे भी शायरी का शौक़ हो गया। यह पुस्तक और सफी साहब का परिचय वेबसाइट में उपलब्ध है।

मोबाइल के द्वारा वेबसाइट बहुत जल्द आपके हाथों में होगी, वह समय आने से पहले आपके लिये वेबसाइट बन चुकी है। वेबसाइट का वार्षिक खर्च, चित्र खींचने और पुस्तकें आदि खरीदने में काफ़ी खर्च होजाता है, में कोई अमीर ;सक्षमद्ध नहीं इसलिए देखते हैं यह जुनून कब तक सवार रहता है। लेखक भी नहीं हूँ आप तक जानकारियॉ पहुँचाने के लिए लिखना शुरू किया, इस लिए प्रोत्साहन की बहुत ज़रूरत है। (1 फरवरी 2007)